नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivahan_Vishesh
YouTube

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 205, नई दिल्ली, शुक्रवार 30 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

**आज का सुविचार**

सफलता केवल मंज़िल तक पहुँचने में नहीं, बल्कि हर दिन स्वयं को पहले से बेहतर बनाने के निरंतर प्रयास में छिपी होती है।

03 मीराबाई का जीवन भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अटूट प्रेम और समर्पण का प्रतीक

06 तस्वीरों और आवाजों के माध्यम से अतीत को जीवित रखना

08 वोट बचाओ देश बचाओ अभियान में शामिल होने झारखंड से 12 बसों में कांग्रेसी दिल्ली रवाना

## दिल्ली में व्यावसायिक वाहनों के लिए ATS दिल्ली नॉर्थ आज से शुरू

# बुराड़ी वाहन जांच शाखा बनी पूर्ण ऑटोमैटिक जांच केंद्र - मैनुअल सिस्टम का अंत

प्रस्तुतकर्ता संजय कुमार बाठला प्रधान संपादक

**मुख्य तथ्य:**

**-स्थान:** Automated Testing Station, Burari अब ATS दिल्ली नॉर्थ

**-शुरुआत:** आज से पूर्णस्वचालित जांच शुरू

**-पहले:** पिछले कुछ महीनों से मैनुअल ढंग से हो रही थी जांच, अब पूर्ण विराम

**-विभाग का दावा:** अब सड़कों पर केवल सुरक्षा मानकों पर खरे उतरने वाले वाहन ही चलेंगे

**मुख्य बिंदु:**

1. सुरक्षा मानकों पर जांच: ब्रेक, प्रदूषण, स्पीड, हेडलाइट सहित सभी पैरामीटर पर स्वचालित परीक्षण

2. मैनुअल सिस्टम समाप्त: मानव हस्तक्षेप कम, पारदर्शिता बढ़ेगी

ऑपरेटर्स का पक्ष (ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन):

- इसे सिर्फ आईवाश बताया। तर्क: दिल्ली ही पहला राज्य था जहाँ ऑटोमैटिक सिस्टम शुरू हुआ, पर 25 की स्पीड पर पास और 40 की स्पीड पर फेल - यह कार्यशैली हाईकोर्ट में सबूतों सहित सिद्ध की गई थी।

- मांग 1: स्पीड की जांच खाली वाहन पर नहीं, बल्कि वाहन की लोडिंग क्षमता के साथ मशीन द्वारा हो।

- मांग 2: VLTD / CCTV / पैनिक बटन को प्रवर्तन शाखा, दिल्ली यातायात पुलिस, दिल्ली पुलिस और परिवहन विभाग के सिस्टम से जोड़ा जाए - जिसकी अभी विभाग ने शुरुआत ही नहीं की।

**जनहित अपील:** दिल्ली के सभी व्यावसायिक वाहन मालिकों से अपील - अपनी जांच तिथि से पहले ही ATS दिल्ली नॉर्थ पर अपना स्लॉट बुक करवा लें, ताकि बाद में परेशानी न हो।

**संपादकीय टिप्पणी:** ATS शुरू होना स्वागत योग्य कदम है, पर तकनीक तभी जनहित में है जब जांच वैज्ञानिक हो - लोड के साथ स्पीड टेस्ट और VLTD-पैनिक बटन का वास्तविक इंटीग्रेशन। परिवहन विभाग के अधिकारियों को धन्यवाद सहित, इन मांगों पर भी त्वरित अमल जरूरी।

# Delhi Zone - O - कोर्ट के भरोसे सरकार - जनता के आँसू की चिंता क्यों नहीं - संसद में कानून क्यों नहीं ?

प्रस्तुतकर्ता संजय कुमार बाठला प्रधान संपादक

**संपादकीय टिप्पणी:** लोकतंत्र में नीतिगत निर्णय से बचना जवाबदेही से भागना है।

**तथ्य (FACT):** यमुना फ्लडप्लेन का संरक्षित क्षेत्र Zone-O है, जिसे दिल्ली मास्टर प्लान 2021 में नदी तल के रूप में अधिसूचित किया गया है।

यहाँ ईंट-गारा निर्माण पर प्रतिबंध है ताकि बाढ़ का पानी सोखा जा सके

इसी जोन में दिल्ली सचिवालय, अक्षरधाम, कॉमनवेल्थ गेम्स विलेज जैसी सरकारी इमारतें भी मौजूद हैं, पर हजारों परिवार बुराड़ी, मिलन विहार, जगतपुर, वजीराबाद, ओखला की 90-150 कालोनियों में दशकों से रह रहे हैं।

2008 में 92 कालोनियां नियमित हुईं, फिर उन्हें Zone-O में डाल दिया गया। 28 सितंबर 2013 के केंद्र के ड्राफ्ट नोटिफिकेशन में इन्हें Zone-O से बाहर करने का प्रस्ताव था, जो आज तक लंबित है।

**मुद्दा (ISSUE):** केंद्र सरकार अब इस मामले को देख रही है। आवास और शहरी कार्य मंत्रालय ने 5 उच्च स्तरीय बैठकें की हैं और DDA से सीमांकन, भू-स्वामित्व की जानकारी मांगी है।

मामला दिल्ली हाईकोर्ट में Vijay Kumar Diwakar बनाम SDMC केस में लंबित है और सरकार का अगला कदम कोर्ट के निर्णय पर निर्भर बताया गया है।

मई 2023 में हाईकोर्ट ने कहा था कि यमुना फ्लडप्लेन में आवासीय कालोनियां पूरी तरह अमान्य हैं, पर 91 अनधिकृत कालोनियों को 31 दिसंबर 2026 तक विशेष कानून के तहत अस्थायी संरक्षण है।

सीएम रेखा गुप्ता ने भी स्पष्ट किया कि मौजूदा ढांचों पर कार्रवाई नहीं होगी, आदेश नए निर्माण के लिए है।

यही वह बिंदु है जहाँ सरकार कोर्ट पर निर्भर दिखती है, जबकि जनता प्रतिकूल आदेश के डर से रखून के आँसूर की स्थिति में है।

**कानूनी दृष्टि से सही-गलत:**

सही: पर्यावरण संरक्षण, बाढ़ प्रबंधन के लिए Zone-O जरूरी।

गलत: दशकों से बसे, PM-UDAY 2019 में शामिल 1731 कालोनियों के लोगों को एक ही लाठी से हटाना। जनहित का संतुलन कानून से ही होगा, केवल कोर्ट की व्याख्या से नहीं।

**मांग (DEMAND):** सरकार को जिम्मेदारी कोर्ट पर छोड़ने के बजाय संसद में स्पष्ट कानून लाना चाहिए - 2013 के ड्राफ्ट को अंतिम करना, सीमांकन स्पष्ट करना, प्राचीन 12 गांवों और 92 कालोनियों को मानवीय आधार पर नियमित करना, और पुनर्वास-राहत की नीति।

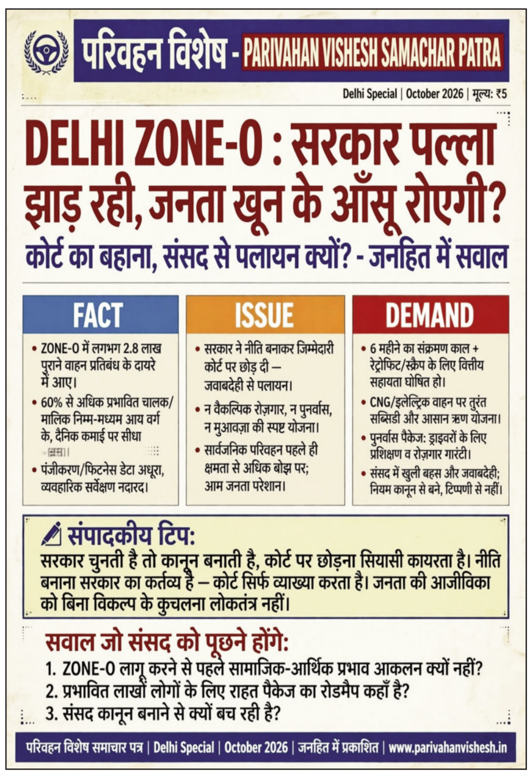


## केंद्र सरकार का बड़ा फैसला - DA/DR में 3% की बढ़ोतरी

# 01.07.2026 से लागू, 48.54 लाख कर्मचारी और 68.71 लाख पेंशनरों को लाभ

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

**तथ्य:**

**- जारी:** PIB Delhi, Release ID: 2329484, दिनांक: 28 OCT 2026, 3:50 PM

**- निर्णय:** केंद्रीय कैबिनेट ने महंगाई भत्ता (DA) और महंगाई राहत (DR) की अतिरिक्त किस्त को मंजूरी दी

**- लागू तिथि:** 01.07.2026 से प्रभावी

**- वृद्धि:** मौजूदा 60% से 3% बढ़कर 63% (बेसिक पे/पेंशन का)

**मुख्य बिंदु:**

**1. उद्देश्य:** मूल्य वृद्धि (price rise) की भरपाई

**2. वित्तीय प्रभाव:** सरकारी खजाने पर सालाना Rs. 10,016.10 करोड़ का अतिरिक्त भार

**3. लाभार्थी:** 48.54 लाख केंद्रीय कर्मचारी + 68.71 लाख पेंशनर = कुल 1.17 करोड़ से अधिक

**4. फॉर्मूला:** 7वें केंद्रीय वेतन आयोग (7th CPC) की स्वीकृत फॉर्मूले के अनुसार

**संपादकीय टिप्पणी:**

त्योहारों से पहले केंद्र सरकार का यह निर्णय केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनरों के लिए बड़ी राहत है। बढ़ती महंगाई के दौर में DA में वृद्धि से क्रय शक्ति बनी रहेगी।

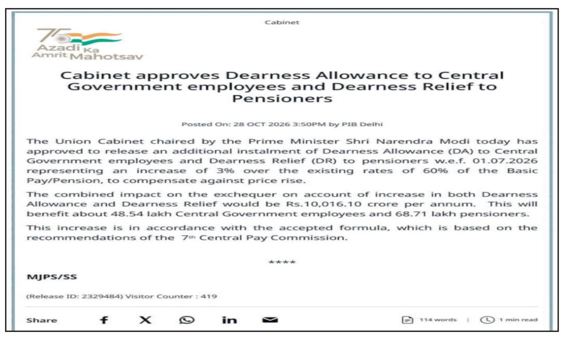

Cabinet

Azadi Ka Amrit Mahotsav

**Cabinet approves Dearness Allowance to Central Government employees and Dearness Relief to Pensioners**

Posted On: 28 OCT 2026 3:50PM by PIB Delhi

The Union Cabinet chaired by the Prime Minister Shri Narendra Modi today has approved to release an additional instalment of Dearness Allowance (DA) to Central Government employees and Dearness Relief (DR) to pensioners w.e.f. 01.07.2026 representing an increase of 3% over the existing rates of 60% of the Basic Pay/Pension, to compensate against price rise.

The combined impact on the exchequer on account of increase in both Dearness Allowance and Dearness Relief would be Rs.10,016.10 crore per annum. This will benefit about 48.54 lakh Central Government employees and 68.71 lakh pensioners.

This increase is in accordance with the accepted formula, which is based on the recommendations of the 7th Central Pay Commission.

****

MJPS/SS

(Release ID: 2329484) Visitor Counter : 419

Share | 114 words | 1 min read

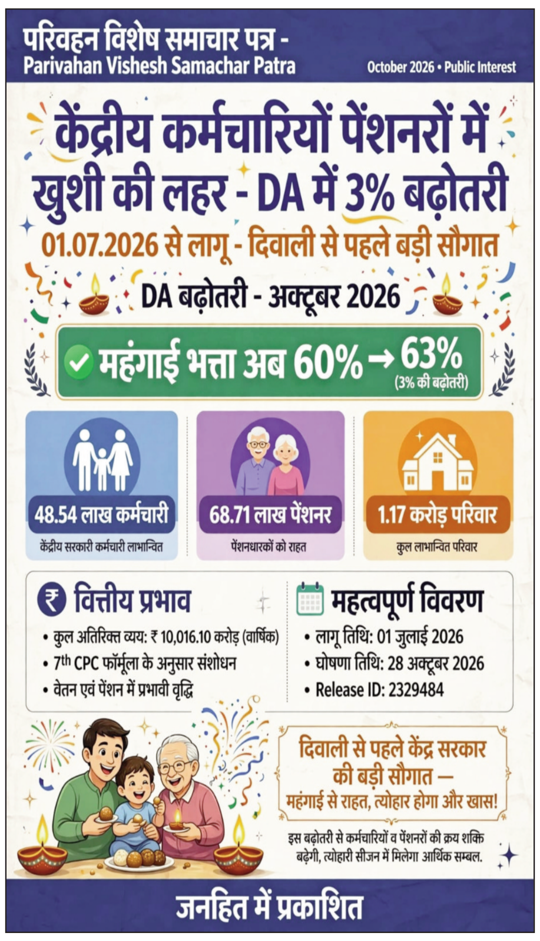


# 'युवा संगम' राष्ट्रीय एकता, युवा शक्ति और असीम संभावनाओं का प्रतीक : रेखा गुप्ता

**मुख्यमंत्री ने एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत दिल्ली आए तमिलनाडु के 55 सदस्यीय युवा संगम प्रतिनिधिमंडल से किया संवाद**

रिपोर्ट प्रो मनोज कैन प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली सचिवालय में भारत सरकार की पहल एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत आयोजित युवा संगम फेज-7 के तहत दिल्ली आए तमिलनाडु के विद्यार्थियों और फैकल्टी कोऑर्डिनेटर्स के प्रतिनिधिमंडल से संवाद किया।

संवाद के दौरान छात्रों से उनका परिचय, किस महाविद्यालय से संबद्ध हैं, उनकी रुचि आदि के विषय में जाना ।

मुख्यमंत्री ने युवा प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि उनकी उपस्थिति भारत की युवा शक्ति, ऊर्जा, आकांक्षाओं और असीम संभावनाओं का प्रतीक है।

युवा संगम जैसे कार्यक्रम देश के विभिन्न राज्यों के युवाओं को एक-दूसरे की संस्कृति, परंपराओं, विकास यात्रा और जीवनशैली को करीब से समझने का अवसर देते हैं।

इससे न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है, बल्कि आपसी विश्वास, सम्मान और राष्ट्रीय एकता की भावना भी मजबूत होती है।

सांस्कृतिक विविधता और राष्ट्रीय एकता पर जोर:- संवाद के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि युवा संगम पहल युवाओं को विभिन्न राज्यों की यात्रा करने, वहां की संस्कृति और विकास को समझने, नवाचार एवं शासन व्यवस्था के बारे में जानने तथा दूसरे राज्यों के जनजीवन का अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है।

भारत की असली ताकत उसकी विविधता में निहित है। अलग-अलग भाषाएं, खान-पान, कला और जीवन शैलियां हमारी राष्ट्रीय पहचान को समृद्ध बनाती हैं।

जब युवा एक राज्य से दूसरे राज्य की यात्रा करते हैं तो न केवल विचारों का आदान-प्रदान होता है, बल्कि स्थायी मित्रता और आपसी सहयोग के नए द्वार भी खुलते हैं।

तमिलनाडु की विरासत और उपलब्धियों की सराहना -- मुख्यमंत्री ने तमिलनाडु की समृद्ध विरासत, साहित्य, कला और ज्ञान परंपराओं का उल्लेख करते हुए कहा कि शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग के क्षेत्र में राज्य का योगदान अतुलनीय है।

उन्होंने विश्वास जताया कि तमिलनाडु से आए युवा अपने राज्य की गौरवशाली विरासत और उपलब्धियों के प्रतिनिधि हैं।

दिल्ली में उनका प्रवास उन्हें राजधानी की सांस्कृतिक विविधता, विकास कार्यों, शासन व्यवस्था और सामुदायिक जीवन को करीब से जानने का अवसर देगा।

दिल्ली की परिवहन व्यवस्था और ऐतिहासिक स्थलों का आमंत्रण -- मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को दिल्ली की आधुनिक परिवहन व्यवस्था, मेट्रो नेटवर्क, इलेक्ट्रिक बसों और नई ईवी नीति को करीब से देखने तथा राजधानी के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थलों का भ्रमण करने के लिए आमंत्रित किया।

एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत 55 सदस्यीय दल का दौरा युवा संगम फेज-7 के अंतर्गत सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ तमिलनाडु के विद्यार्थियों और फैकल्टी कोऑर्डिनेटर्स का प्रतिनिधिमंडल 26 अक्टूबर से एक नवम्बर तक दिल्ली के प्रवास पर है।

इस कार्यक्रम में तमिलनाडु के विद्यार्थी और फैकल्टी कोऑर्डिनेटर्स सहित 84 लोग शामिल हैं।

नोडल ऑफिसर प्रो केपी सिंह ने बताया कि एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत युवा संगम फेज 7 कार्यक्रम एक यूनिवर्सिटी से दूसरी यूनिवर्सिटी के बीच युवाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करना, वहाँ की सभ्यता,संस्कृति, साहित्य , भाषा, रहन सहन जानने के लिए आपसी सहयोग प्रदान करना है।

उन्होंने बताया कि हमारी यूनिवर्सिटी के 55 सदस्यीय छात्रों की एक टीम तमिलनाडु गई हुई है।

इस अवसर पर उच्च शिक्षा मंत्रालय के उप सचिव श्रेयांश मोहन, युवा संगम फेज-7 के नोडल अधिकारी प्रो.केपी सिंह, एसजीटीबी खालसा कॉलेज के प्रिंसिपल प्रो. गुरमोहिंदर सिंह, पीजीडीएवी कॉलेज सांध्य की प्राचार्या प्रो हरेंन्द्री चौधरी, दयाल सिंह कॉलेज की प्राचार्या प्रो भावना पांडे, प्रो.हंसराज सुमन - संयुक्त निदेशक गांधी भवन, केंद्रीय तमिलनाडु विश्वविद्यालय के फैकल्टी कोऑर्डिनेटर प्रो. नागेश्वर राव डी, श्रीअंश मिश्रा, प्रो.मनोज कुमार कैन श्रद्धानंद कॉलेज के डॉ मनीष कुमार, लाइब्रेरी साइंस विभाग के डॉ मनीष कुमार, डॉ.ज्ञानेंद्र सिंह आदि उपस्थित थे।

मंच संचालन प्रो चारू कालरा ने किया तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन डीडीयू कॉलेज के प्राचार्य प्रो हेमचंद जैन ने किया ।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html |
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

# आज का साइबर सुरक्षा विचार : साइबर हाइजीन को संस्कृति बनाइए। श्रेष्ठ साइबर सुरक्षा प्रथाओं को अपनाइए।

पिंकी कुंडू

साइबर हाइजीन की संस्कृति का निर्माण: सर्वोत्तम साइबर सुरक्षा प्रथाओं को अपनाना

राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा जागरूकता माह October 2026 के समापन दिवसों में एक संदेश

आज के डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में डेटा व्यक्तियों, व्यवसायों तथा सरकारों की सबसे मूल्यवान परिसंपत्तियों में से एक है। जैसे-जैसे साइबर खतरे अधिक जटिल और व्यापक होते जा रहे हैं, साइबर सुरक्षा केवल आईटी विभागों की जिम्मेदारी नहीं रह गई है। प्रत्येक उपयोगकर्ता डिजिटल परिसंपत्तियों की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साइबर हाइजीन से तात्पर्य उन नियमित आदतों और प्रक्रियाओं से है, जो प्रणालियों, उपकरणों और डेटा की सुरक्षा एवं अखंडता बनाए रखने में सहायता करती हैं।

साइबर हाइजीन की संस्कृति केवल अनुपालन तक सीमित नहीं है। यह सुरक्षा-सचेत व्यवहार को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाती है, जिससे साइबर सुरक्षा एक साझा जिम्मेदारी और जीवन शैली बन जाती है।

साइबर हाइजीन की संस्कृति बनाएं: सर्वोत्तम साइबर सुरक्षा प्रथाएं अपनाएं

साइबर हाइजीन डिजिटल सुरक्षा की आधारशिला है। जिस प्रकार व्यक्तिगत स्वच्छता बीमारियों से बचाव करती है, उसी प्रकार साइबर हाइजीन साइबर खतरों, डेटा उल्लंघनों, रैनसमवेयर हमलों और पहचान की चोरी से सुरक्षा प्रदान करती है। किसी संगठन में सुरक्षित डिजिटल आदतों का विकास एक मजबूत साइबर सुरक्षा संस्कृति का निर्माण करता है और साइबर जोखिमों को काफी हद तक कम करता है।

डेटा बैकअप हाइजीन: प्रमुख सर्वोत्तम प्रथाएं

◈ केवल अधिकृत प्लेटफॉर्म का उपयोग करें

डेटा का संग्रहण और बैकअप केवल संगठन द्वारा अनुमोदित प्लेटफॉर्म और क्लाउड सेवाओं पर करें।

◈ अनधिकृत अपलोड से बचें

संवेदनशील या सरकारी/आधिकारिक जानकारी को कभी भी व्यक्तिगत क्लाउड स्टोरेज या अनधिकृत एप्लिकेशन पर अपलोड न करें।

◈ बैकअप खातों को सुरक्षित रखें

सभी बैकअप और क्लाउड खातों के लिए मजबूत एवं अद्वितीय पासवर्ड का उपयोग करें तथा मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (MFA) सक्षम करें।

◈ रिकवरी क्रेडेंशियल्स की सुरक्षा करें

बैकअप पासवर्ड, रिकवरी कोड और एन्क्रिप्शन कुंजियों को सुरक्षित स्थान पर अलग से संरक्षित रखें।

◈ ऑफलाइन बैकअप बनाए रखें

कम से कम एक बैकअप को नेटवर्क और उपकरणों से अलग रखें, ताकि रैनसमवेयर के जोखिम को कम किया जा सके।

◈ बैकअप की स्थिति की नियमित समीक्षा करें

विफल, अधूरे, क्षतिग्रस्त या पुराने बैकअप की नियमित जांच करें और समय पर सुधारात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करें।

◈ भौतिक स्टोरेज माध्यमों को सुरक्षित रखें

जब उपयोग में न हों, तब बाहरी ड्राइव और बैकअप उपकरणों को सुरक्षित तथा नियंत्रित पहुंच वाले वातावरण में रखें।

साइबर हाइजीन संस्कृति के निर्माण के उपाय

☑ किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले सोचें।

☑ सॉफ्टवेयर और उपकरणों को समय पर अपडेट करें।

☑ मजबूत और अद्वितीय पासवर्ड का उपयोग करें।

☑ जहां संभव हो, MFA सक्षम करें।

✓ संदिग्ध ईमेल और साइबर घटनाओं की तुरंत रिपोर्ट करें।

✓ संगठन की साइबर सुरक्षा नीतियों का पालन करें।

✓ साइबर जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लें।

साइबर सुरक्षा केवल तकनीक का विषय नहीं है, बल्कि यह सभी की साझा जिम्मेदारी है। मजबूत साइबर हाइजीन प्रथाएं, नियमित डेटा बैकअप और सुरक्षा जागरूकता व्यक्तियों एवं संगठनों को निरंतर विकसित हो रहे साइबर खतरों से सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

साइबर हाइजीन कोई एक बार किया जाने वाला कार्य नहीं है, बल्कि यह प्रतिदिन अपनाई जाने वाली आदत है।

साइबर हाइजीन को संस्कृति बनाइए। सर्वोत्तम साइबर सुरक्षा प्रथाओं को अपनाइए।

# दवा कीमतों पर सर्वोच्च न्यायालय की चिंता जायज

सौरभ वार्ष्णेय

स्वास्थ्य किसी भी सभ्य समाज की बुनियादी आवश्यकता है और जीवन बचाने वाली दवाओं तक सुलभ पहुंच प्रत्येक नागरिक का अधिकार होना चाहिए। लेकिन जब बीमारी से जूझ रहा व्यक्ति इलाज के खर्च के सामने बेबस हो जाए, तब स्वास्थ्य व्यवस्था की प्राथमिकताओं पर सवाल उठना स्वाभाविक है। देश की सर्वोच्च न्यायालय ने दवाओं और चिकित्सा उत्पादों की कीमतों में कथित भारी अंतर पर जो गंभीर चिंता जताई है, वह केवल दवा बाजार की अनियमितताओं का मामला नहीं, बल्कि जनस्वास्थ्य, सरकारी जवाबदेही और मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा एक व्यापक प्रश्न है। अदालत के समक्ष कैंसर के एक इंजेक्शन का उदाहरण आया, जिसकी कीमत लगभग ग्यारह हजार रुपये बताई गई, जबकि निजी अस्पताल में उसी इंजेक्शन के लिए डेढ़ लाख रुपये वसूले जाने की बात सामने आई। यदि इन आंकड़ों की पुष्टि होती है, तो यह अंतर निश्चित रूप से जांच और जवाबदेही की मांग करता है।

कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहे मरीज और उसके परिजन पहले ही मानसिक, शारीरिक बेदना सहित आर्थिक संकट से गुजरते हैं। ऐसे समय में इलाज का खर्च उनकी परेशानी को कई गुना बढ़ा देता है। परिवार अपनी बचत खर्च करता है, संपत्ति बेचने को मजबूर होता है और कई बार उधार लेकर उपचार कराता है। यदि किसी दवा की खरीद कीमत और मरीज से वसूली जाने वाली राशि के बीच असाधारण अंतर है, तो यह जानना आवश्यक है कि उस अंतर में दवा की वास्तविक लागत, अस्पताल का खर्च, भंडारण, आपूर्ति, कर, सेवा शुल्क और अन्य मदों का कितना योगदान है।

यह समझना भी जरूरी है कि दवा की निर्माता कीमत, वितरक की कीमत, अधिकतम खुदरा मूल्य एमआरपी और अस्पताल द्वारा मरीज से वसूली जाने वाली राशि हमेशा एक समान नहीं होती। अस्पताल में दवा देने, उसे सुरक्षित रखने, निगरानी करने और उपचार संबंधी सेवाओं का खर्च भी हो सकता है। लेकिन इन खर्चों के नाम पर यदि बिना उचित आधार के कई गुना रकम वसूली जाती है, तो उसे सामान्य व्यावसायिक गतिविधि मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। मरीज को स्पष्ट बिल, मूल्य का उचित विवरण और इलाज से संबंधित खर्चों की पारदर्शी जानकारी मिलनी चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण की भूमिका और दवाओं की कीमतों पर नियंत्रण की व्यवस्था को लेकर भी सवाल उठाए हैं। यह चिंता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि दवाओं के मूल्य निर्धारण और आवश्यक औषधियों की उपलब्धता में सरकार की भूमिका निर्णायक होती है। जब बाजार में जीवनरक्षक दवाओं के दाम आम नागरिक की पहुंच से बाहर होने लगें, तब केवल नीतियां बनाने से काम नहीं चलेगा, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन की भी समीक्षा होनी चाहिए।

भारत में आवश्यक दवाओं की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए औषधि मूल्य नियंत्रण आदेश और राष्ट्रीय आवश्यक औषधि सूची जैसी व्यवस्थाएं मौजूद हैं। इनके माध्यम से निर्धारित दवाओं के मूल्य पर नियंत्रण रखने का प्रयास किया जाता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या निगरानी व्यवस्था मरीजों तक पर्याप्त राहत पहुंचा पा रही है? क्या मूल्य नियंत्रण के दायरे से बाहर रहने वाली दवाओं और अस्पतालों में इस्तेमाल होने वाले चिकित्सा उत्पादों की कीमतों पर पर्याप्त पारदर्शिता है? क्या नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध समय पर कार्रवाई होती है? इन सवालों के जवाब केवल सरकारी आंकड़ों से नहीं, बल्कि मरीजों के वास्तविक अनुभवों और स्वतंत्र जांच से भी मिलने चाहिए।

अदालत में सलाइन ड्रिप, हार्ट स्टेंट और एंटीबायोटिक जैसी वस्तुओं की कीमतों के उदाहरण भी सामने आए। बताया गया कि लगभग 11 रुपये की सलाइन ड्रिप 270 रुपये में, पांच हजार रुपये का हार्ट स्टेंट 25 हजार रुपये से अधिक में और 28 रुपये की एंटीबायोटिक एजिथ्रोमाइसिन 70 रुपये से अधिक में बेची जा रही है। इन आंकड़ों को संबंधित उत्पादों, उनकी गुणवत्ता, पैकेजिंग, कर, आपूर्ति और बिक्री के स्तर के संदर्भ में सत्यापित करना जरूरी है। फिर भी यदि समान उत्पादों की खरीद और बिक्री कीमतों में इतना बड़ा अंतर पाया जाता है, तो नियामक संस्थाओं को उसका स्पष्ट कारण सामने रखना चाहिए।

विशेष रूप से हार्ट स्टेंट और कैंसर के उपचार में उपयोग होने वाली दवाओं के मामले में मूल्य पारदर्शिता का महत्व और बढ़ जाता है। मरीज अक्सर चिकित्सक की सलाह पर निर्भर होता है और उसे बाजार में विकल्पों की तुलना करने का पर्याप्त अवसर नहीं मिलता। ऐसे में उसकी मजबूरी का लाभ उठाने की किसी भी संभावना को रोकना सरकार, अस्पताल प्रशासन और नियामक संस्थाओं की जिम्मेदारी है।

दवा उद्योग अनुसंधान, नई दवाओं के विकास, उत्पादन और वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कंपनियों को उचित लाभ कमाने का अधिकार है, लेकिन जीवनरक्षक दवाओं का बाजार सामान्य उपभोक्ता वस्तुओं के बाजार से अलग है। यहां ग्राहक के पास कई बार खरीद टालने या सस्ता विकल्प चुनने की स्वतंत्रता नहीं होती। गंभीर बीमारी में दवा का विकल्प सीमित हो सकता है और उपचार में देरी जानलेवा साबित हो सकती है। इसलिए स्वास्थ्य क्षेत्र में बाजार की शक्तियों के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व और प्रभावी सरकारी नियमन का संतुलन आवश्यक है।

केंद्र सरकार की ओर से यह दलील दी गई कि भारत में दवाओं की कीमतें दुनिया के कई देशों की तुलना में कम हैं। अंतरराष्ट्रीय तुलना अपने स्थान पर उपयोगी हो सकती है, लेकिन भारतीय मरीज की आर्थिक स्थिति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। किसी दवा का दूसरे देश की तुलना में सस्ता होना अपने आप में इस बात का प्रमाण नहीं है कि उसकी कीमत हर भारतीय परिवार की पहुंच में है। असली कसौटी यह होनी चाहिए कि मरीज को आवश्यक उपचार कितने खर्च में, कितनी आसानी से और कितनी पारदर्शिता के साथ उपलब्ध हो रहा है।

सरकार को दवाओं की कीमतों और अस्पतालों में होने वाली वसूली की नियमित जांच के लिए प्रभावी व्यवस्था विकसित करनी चाहिए। अस्पतालों में दवाओं और चिकित्सा उपकरणों की खरीद कीमत, मरीज से वसूली गई कीमत तथा सेवा शुल्क का स्पष्ट विवरण उपलब्ध कराया जाना चाहिए। आवश्यक दवाओं की सूची और मूल्य नियंत्रण की समीक्षा समय-समय पर होनी चाहिए। जहां असामान्य मूल्य अंतर सामने आए, वहां निष्पक्ष जांच कर जिम्मेदारी तय की जाए। साथ ही, मरीजों की शिकायतों के त्वरित निस्तारण और अनुचित वसूली पाए जाने पर उचित कार्रवाई की व्यवस्था भी मजबूत होनी चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय की चिंता का वास्तविक महत्व तभी सिद्ध होगा, जब उससे व्यवस्था में ठोस सुधार का रास्ता खुले। केवल टिप्पणियों से मरीजों का आर्थिक बोझ कम नहीं होगा। इसके लिए सरकार, दवा कंपनियों, अस्पतालों और नियामक संस्थाओं को जवाबदेह बनाना होगा।

लोककल्याणकारी व्यवस्था की पहचान केवल अस्पतालों की संख्या या चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार से नहीं होती, बल्कि इससे होती है कि संकट की घड़ी में आम नागरिक को कितना सहारा मिलता है। दवाओं की कीमतें तय करने और उनकी बिक्री पर निगरानी रखने वाली व्यवस्था का उद्देश्य मरीजों को राहत देना होना चाहिए। जीवनरक्षक दवाओं के मामले में पारदर्शिता, उचित मूल्य और जवाबदेही कोई अतिरिक्त सुविधा नहीं, बल्कि जनहित की अनिवार्य शर्तें हैं। आखिरकार, किसी भी व्यवस्था की सफलता का मूल्यांकन इस आधार पर होना चाहिए कि वह जीवन बचाने में कितनी सहायक है, न कि बीमारी से जूझ रहे परिवारों पर कितना आर्थिक बोझ डालती है।

**लेखक वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक, राजनीतिक विचारक है।**

**सौरभ वार्ष्णेय**
**BSc(Ag), LLB, PGDJMC, MJ**
**लेखक वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक, राजनीतिक विचारक है।**

# बच्चों की आँखों की रोशनी तेजी से हो रही है कम: 2050 तक दुनिया की लगभग आधी आबादी को चश्मे की जरूरत पड़ सकती है

**डॉ. विजय गर्ग**

आज के आधुनिक युग में बच्चों की आँखों की घटती रोशनी एक गंभीर चिंता का विषय बन गई है। पहले बहुत कम बच्चे चश्मा पहने दिखाई देते थे, लेकिन आज कई स्कूलों की कक्षाओं में बड़ी संख्या में बच्चे चश्मा लगाए नजर आते हैं। वैज्ञानिक अनुमानों के अनुसार, यदि निकट दृष्टिदोष (मायोपिया) बढ़ने का वर्तमान रुझान जारी रहा, तो 2050 तक दुनिया की लगभग आधी आबादी इससे प्रभावित हो सकती है और अनेक लोगों को दूर की वस्तुएँ स्पष्ट देखने के लिए चश्मे की आवश्यकता पड़ सकती है।

यह स्थिति केवल आँखों की समस्या नहीं है, बल्कि बच्चों की जीवनशैली, शिक्षा और शारीरिक विकास से भी जुड़ी हुई है।

**### स्क्रीन का बढ़ता उपयोग: एक प्रमुख कारण**

बच्चों की आँखों की रोशनी कमजोर होने के बढ़ते मामलों के पीछे कई कारण हैं। इनमें मोबाइल फोन, टैबलेट, कंप्यूटर और टेलीविजन का लंबे समय तक उपयोग एक महत्वपूर्ण कारक है। डिजिटल उपकरण बच्चों की पढ़ाई, मनोरंजन और दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं।

पहले बच्चे अपना खाली समय बाहर खेलने, दोस्तों के साथ घूमने और प्रकृति के करीब बिताते थे। अब कई बच्चे घंटों तक स्क्रीन के सामने बैठे रहते हैं। लंबे समय तक पास की वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने से आँखों में थकान, सूखापन और सिरदर्द जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। बचपन में लंबे समय तक पास की वस्तुओं को देखने और बाहर कम समय बिताने की आदत मायोपिया के बढ़ते जोखिम से भी जुड़ी हुई है।

**### बाहर खेलने की कमी**

बच्चों का घरों और कक्षाओं तक सीमित हो जाना भी चिंता का विषय है। वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि प्राकृतिक रोशनी में बाहर समय बिताने से बच्चों में मायोपिया शुरू होने का जोखिम कम करने में मदद मिल सकती है।

माना जाता है कि प्राकृतिक रोशनी रेटिना में डोपामिन नामक रसायन के स्राव को प्रभावित करती है, जो आँखों के विकास को नियंत्रित करने में भूमिका निभा सकता है।

इसलिए बच्चों को प्रतिदिन पार्कों, खेल के मैदानों और खुली जगहों पर खेलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। बाहर खेलना केवल आँखों के लिए ही नहीं, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक प्रसन्नता और सामाजिक विकास के लिए भी लाभदायक है।

**### पढ़ाई का बढ़ता बोझ और बदलती जीवनशैली**

कई एशियाई देशों में बच्चों में मायोपिया की दर काफी अधिक पाई जाती है। इसके पीछे आनुवंशिक कारणों के साथ-साथ पर्यावरण और जीवनशैली की भी भूमिका हो सकती है। लंबे समय तक घर के अंदर बैठकर पढ़ना, लगातार लिखना और पास की वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करना इस समस्या से जुड़े कारक हैं।

बच्चों को पढ़ाई से दूर रखना इसका समाधान नहीं है। इसके बजाय पढ़ाई, आराम, शारीरिक गतिविधियों और बाहरी खेलों के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। प्रत्येक बच्चे को पढ़ाई के साथ खेलने और खुली हवा में समय बिताने का अवसर मिलना चाहिए।

**### पोषण और आँखों का स्वास्थ्य**

संतुलित आहार भी आँखों के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। विटामिन ए की कमी आँखों की कुछ गंभीर समस्याओं, विशेषकर रात में कम दिखाई देने, का कारण बन सकती है। हरी पत्तेदार सब्जियाँ, गाजर, कद्दू, फल, दूध, अंडे और अन्य पौष्टिक खाद्य पदार्थ बच्चों के समग्र स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हैं।

हालाँकि, यह समझना जरूरी है कि विटामिन ए की कमी और मायोपिया दो अलग-अलग समस्याएँ हैं। केवल पौष्टिक भोजन से मायोपिया को रोकने की गारंटी नहीं दी जा सकती। इसलिए संतुलित आहार के साथ उचित जीवनशैली और आँखों की नियमित जाँच भी आवश्यक है।

**### बच्चों की दृष्टि सुरक्षित रखने के लिए जरूरी कदम**

इस समस्या से निपटने के लिए माता-पिता, शिक्षकों और स्कूल प्रबंधन को मिलकर प्रयास करना चाहिए।

**1. प्रतिदिन बाहर खेलने का समय:** बच्चों को हर दिन लगभग 90 से 120 मिनट प्राकृतिक रोशनी में बाहर समय बिताने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। यह समय बच्चे की उम्र, स्वास्थ्य और परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित किया जाना चाहिए।

**2. 20-20-20 नियम:** डिजिटल स्क्रीन का उपयोग करते समय प्रत्येक 20 मिनट बाद 20 सेकंड के लिए लगभग 20 फीट दूर स्थित किसी वस्तु को देखें। इससे आँखों के तनाव को कम करने में मदद मिल सकती है, हालाँकि यह मायोपिया को रोकने का निश्चित उपाय नहीं है।

**3. स्क्रीन समय में संतुलन:** बच्चों के मनोरंजन के लिए मोबाइल फोन पर निर्भरता कम की जानी चाहिए। उन्हें खेलकूद, पुस्तकें पढ़ने, कला और अन्य रचनात्मक गतिविधियों की ओर प्रेरित करना चाहिए।

**4. आँखों की नियमित जाँच:** बच्चों की दृष्टि की समय-समय पर जाँच करानी चाहिए। यदि बच्चा ब्लैकबोर्ड देखने में कठिनाई महसूस करे, किताब को बहुत पास रखकर पढ़े या बार-बार आँखें सिकोड़कर देखे, तो नेत्र विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए।

**5. समय पर उपचार:** यदि मायोपिया का पता चलता है, तो नेत्र विशेषज्ञ बच्चे की स्थिति के अनुसार चश्मा, विशेष कॉन्टैक्ट लेंस या कुछ दवाओं के माध्यम से इसकी प्रगति को धीमा करने के विकल्प सुझा सकते हैं।

**### निष्कर्ष:** स्पष्ट दृष्टि, उज्ज्वल भविष्य

बच्चों की दृष्टि केवल उनकी आँखों की रोशनी नहीं, बल्कि उनके भविष्य से भी जुड़ी हुई है। आज के समय में तकनीक का उपयोग आवश्यक है, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग से बचना भी उतना ही जरूरी है। मोबाइल और कंप्यूटर शिक्षा के उपयोगी साधन हैं, परंतु उन्हें बच्चों के खेल, प्रकृति और स्वास्थ्य का विकल्प नहीं बनना चाहिए।

यदि माता-पिता, शिक्षक और समाज आज से ही सावधानी बरतें, तो बच्चों की आँखों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं।

**आइए, बच्चों को स्क्रीन की दुनिया से बाहर निकालकर प्रकृति के करीब लाएँ, ताकि आने वाली पीढ़ियों का भविष्य स्वस्थ, सुरक्षित और उज्ज्वल बन सके।**

**डॉ. विजय गर्ग**
**सेवानिवृत्त प्राचार्य। पूर्व PES-1**
**शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात शिक्षाविद**
**मलोट, पंजाब**

# करवाचौथ एवं एनीमिया: आस्था के साथ स्वास्थ्य की सुरक्षा भी जरूरी!

प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

भारत में लगभग 57% महिलाएँ एनीमिया से प्रभावित है।—व्रत रखने से पहले अपनी सेहत का ध्यान रखें।

भारत के लिए एनीमिया (खून की कमी) महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़ी एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (NFHS-5, 2019–2021) के अनुसार, 15–49 वर्ष की लगभग 57% महिलाएँ एनीमिया से प्रभावित थीं। गर्भवती महिलाओं में इसका प्रसार 52.2% दर्ज किया गया था।

एनीमिया क्या है और यह क्यों खतरनाक हो सकता है? एनीमिया में रक्त में हीमोग्लोबिन का स्तर सामान्य से कम हो जाता है। हीमोग्लोबिन शरीर के विभिन्न अंगों तक ऑक्सीजन पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

**इसके प्रमुख लक्षण हैं:**

-लगातार थकान और कमजोरी।

* चक्कर आना या सिरदर्द।

* साँस फूलना और दिल की धड़कन तेज होना।

* त्वचा का पीला पड़ना तथा शारीरिक क्षमता में कमी।

ध्यान रखें कि हल्के एनीमिया में हमेशा स्पष्ट लक्षण दिखाई नहीं देते।

करवाचौथ के निर्जला व्रत में विशेष सावधानी क्यों जरूरी है? करवाचौथ पर कई महिलाएँ सूर्योदय से चंद्रोदय तक भोजन और पानी ग्रहण नहीं करतीं। एनीमिया से पीड़ित महिलाओं में लंबे समय तक उपवास रखने से कमजोरी, चक्कर और थकान बढ़ सकती है। पानी न पीने से निर्जलीकरण का जोखिम भी रहता है।

विशेष सावधानी उन महिलाओं को रखनी चाहिए जिन्हें पहले से गंभीर एनीमिया, कम रक्तचाप, मधुमेह, हृदय या गुर्दे की बीमारी है, अथवा जो नियमित दवाएँ लेती हैं।

**स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए जरूरी सुझाव**

1 **अपनी सेहत को प्राथमिकता दें:** यदि एनीमिया है या कमजोरी, चक्कर अथवा साँस फूलने की शिकायत रहती है, तो व्रत रखने से पहले डॉक्टर से सलाह लें।

2 **हीमोग्लोबिन की जाँच कराएँ:** जरूरत पड़ने पर डॉक्टर की सलाह से CBC तथा आयरन की स्थिति जानने के लिए फेरिटिन जैसी जाँच कराई जा सकती है।

3 **पौष्टिक भोजन लें:** हरी पत्तेदार सब्जियाँ, दालें, चना, बीन्स, तिल तथा आयरन से भरपूर अन्य खाद्य पदार्थों को आहार में शामिल करें। विटामिन C से भरपूर आहार आयरन के अवशोषण में सहायता करता है।

4 **निर्जला व्रत को अनिवार्य न समझें:** यदि स्वास्थ्य इसकी अनुमति नहीं देता, तो उपवास में बदलाव करना या व्रत न रखना अधिक सुरक्षित विकल्प हो सकता है।

धार्मिक आस्था के साथ अपने शरीर की जरूरतों का सम्मान करना भी जरूरी है।

5 **व्रत खोलते समय सावधानी रखें:** पानी धीरे-धीरे पिएँ और संतुलित, पौष्टिक भोजन लें। अत्यधिक तला-भुना भोजन करने से बचें।

6 **बिना सलाह आयरन की गोलियाँ न लें:** एनीमिया के कई कारण हो सकते हैं। उचित जाँच के बाद ही डॉक्टर की सलाह से उपचार करें।

नवीनतम जानकारी और महत्त्वपूर्ण तथ्य NFHS-6 (2023–2024) के तथ्य-पत्र मई 2026 में जारी किए गए, लेकिन उपलब्ध सरकारी जानकारी के अनुसार एनीमिया के नए राष्ट्रीय आँकड़े अभी जारी नहीं हुए हैं। इसलिए 57% का आँकड़ा NFHS-5 के 2019–2021 के सर्वेक्षण पर आधारित है; इसे वर्तमान स्थिति का सटीक अनुमान नहीं मानना चाहिए।

भारत सरकार का 'एनीमिया मुक्त भारत' कार्यक्रम आयरन एवं फोलिक एसिड अनुपूरण, जाँच, उपचार, कृमिनाशन और पोषण संबंधी जागरूकता के माध्यम से एनीमिया की रोकथाम और नियंत्रण पर काम करता है।

**स्वास्थ्य संदेश**

व्रत श्रद्धा का प्रतीक है, लेकिन स्वास्थ्य जीवन का आधार है।

करवाचौथ पर अपने जीवनसाथी की लंबी उम्र और सुखमय जीवन की कामना करते समय अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी उतना ही आवश्यक है। एनीमिया से पीड़ित महिलाओं को अपनी स्थिति समझे बिना निर्जला उपवास नहीं करना चाहिए।

**याद रखें:** स्वस्थ महिला, स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज की आधारशिला है।

आस्था का सम्मान करें, पर स्वास्थ्य से समझौता न करें।

**विशेष स्वास्थ्य चेतावनी:** यदि व्रत के दौरान बेहोशी, सीने में दर्द, साँस लेने में कठिनाई या अत्यधिक कमजोरी हो, तो व्रत तुरंत रोकें और तत्काल चिकित्सा सहायता लें।

# मीराबाई का जीवन भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अटूट प्रेम और समर्पण का प्रतीक

परिवहन विशेष न्यूज

**खूंटी।** भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त एवं महान संत कवयित्री मीराबाई की कृष्ण भक्ति पर एक विशेष धार्मिक परिचर्चा पद्म सरिता आध्यात्मिक दर्शन संघ के तत्वावधान में भगतसिंह चौक पर गुरुवार को आयोजन किया गया। परिचर्चा में पद्म सरिता आध्यात्मिक दर्शन संघ के अध्यक्ष डॉ दीपक कुमार घोष ने मीराबाई के जीवन, उनकी भक्ति भावना तथा आध्यात्मिक विचारों पर विस्तार से प्रकाश डाला।मुरहू के समाजसेवी डॉ धर्मेंद्र नाथ तिवारी ने कहा कहा कि मीराबाई का संपूर्ण जीवन भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अटूट प्रेम, श्रद्धा और समर्पण का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने सांसारिक बंधनों से ऊपर उठकर श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व माना। उनकी भक्ति में प्रेम, विरह, त्याग और आत्मसमर्पण की अद्भुत अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

अखिल भारतीय सांस्कृतिक विकास महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष तपन घोष ने कहा कि मीराबाई ने अपने भजनों के माध्यम से समाज को भक्ति, प्रेम, समानता और आध्यात्मिक चेतना का संदेश दिया। युवा ध्रुवेन्द्र भास्कर ने कहा कि भक्त मीराबाई की रचनाएं आज भी

> अखिल भारतीय सांस्कृतिक विकास महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष तपन घोष ने कहा कि मीराबाई ने अपने भजनों के माध्यम से समाज को भक्ति, प्रेम, समानता और आध्यात्मिक चेतना का संदेश दिया।

श्रद्धालुओं के हृदय में विशेष स्थान रखती हैं। मीराबाई की कृष्ण भक्ति केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन में प्रेम, विश्वास और आत्मिक शांति का मार्ग भी प्रशस्त करती है। गुरु अनुप ने कार्यक्रम में मीराबाई के प्रसिद्ध भजनों का उल्लेख करते हुए उनकी भक्ति परंपरा की महत्ता बताई। वक्ताओं ने कहा कि वर्तमान समय में भी मीराबाई के विचार प्रासंगिक हैं और युवाओं को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।अंत में भगवान श्रीकृष्ण की आराधना के साथ परिचर्चा का समापन हुआ। उपस्थित श्रद्धालुओं ने मीराबाई की भक्ति भावना को अपने जीवन में आत्मसात करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में जितेन्द्र पांडे, तुलसी प्रजापति, किशोर ठाकुर, बिरसा लोहरा सहित अन्य उपस्थित थे।

## धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

*जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते*

**30 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 5 — बदलाव, संवाद, अनुकूलता, गति और अवसर**

### मूलांक 1
**धन व करियर:** दिन का अंक 5 आपकी नेतृत्व ऊर्जा में गति, संवाद और लचीलापन जोड़ता है। नया संपर्क, बातचीत या काम का नया तरीका अवसर दे सकता है, लेकिन आर्थिक उद्देश्य स्पष्ट रखें।
**रिश्ते:** आप जल्दी उत्तर और स्वतंत्रता चाह सकते हैं। अपनी योजना बताते रहें ताकि स्वतंत्रता सामने वाले को उपेक्षा जैसी न लगे।
**सावधानी:** अधीरता, अचानक खरीदारी और केवल नया विकल्प आकर्षक लगने के कारण अच्छी योजना बदलने से बचें।
**दिन बेहतर बनाएं:** एक सोच-समझा अवसर लें और संवाद को सीधा लेकिन लचीला रखें।

### मूलांक 2
**धन व करियर:** दिन 5 आपकी संवेदनशील प्रकृति को अधिक अनुकूल बनने को कहता है। नेटवर्किंग, कॉल या दिनचर्या में बदलाव उपयोगी जानकारी दे सकता है, लेकिन धन संबंधी निर्णय से पहले विवरण जांचें।
**रिश्ते:** आज भावनात्मक मूड जल्दी बदल सकता है। देर से मिले उत्तर या बदले स्वर का अधिक अर्थ निकालने के बजाय खुलकर बात करें।
**सावधानी:** घबराहट में खर्च, मिश्रित संकेतों पर अधिक सोच और केवल सामंजस्य बनाए रखने के लिए तुरंत हाँ कहने से बचें।
**दिन बेहतर बनाएं:** भावनात्मक रूप से संतुलित रहें और उपयोगी बदलाव के लिए खुले रहें।

### मूलांक 3
**धन व करियर:** दिन 5 आपकी संवाद और रचनात्मक क्षमता के साथ अच्छा मेल रखता है। बिक्री, मार्केटिंग, शिक्षण, कंटेंट या नेटवर्किंग में गति मिल सकती है, यदि संदेश स्पष्ट रखें और समय पर फॉलो-अप करें।
**रिश्ते:** बातचीत जीवंत और आनंददायक रह सकती है। हास्य में सम्मान रखें और जरूरी भावनाओं को लगातार सामाजिक व्यस्तता के पीछे न छिपाएं।
**सावधानी:** बिखरी प्रतिबद्धताएं, गॉसिप और मनोरंजन या दिखावे पर अधिक खर्च से बचें।
**दिन बेहतर बनाएं:** अपने शब्दों से एक उपयोगी संपर्क बनाएं और उसे वास्तविक कदम में बदलें।

### मूलांक 4
**धन व करियर:** दिन 5 आपकी व्यवस्थित प्रकृति को थोड़ा लचीला बनने की चुनौती देता है। समय, तरीका या अवसर में बदलाव उपयोगी हो सकता है, यदि उसे बिना जांचे नकारने के बजाय तार्किक रूप से देखें।
**रिश्ते:** दिनचर्या में बदलाव धैर्य मांग सकता है। सामने वाला काम अलग तरीके से करे तो आलोचना के बजाय अनुकूल बनें।
**सावधानी:** कठोरता, आखिरी समय के बदलाव पर अधिक चिढ़ और खराब योजना के कारण अनावश्यक खर्च से बचें।
**दिन बेहतर बनाएं:** मुख्य प्राथमिकताएं बनाए रखते हुए एक समझदार बदलाव स्वीकार करें।

### मूलांक 5
**धन व करियर:** आपके मूलांक 5 और दिन के अंक 5 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। संवाद, गति, व्यवसायिक समझ और अनुकूलता बढ़ेगी। नेटवर्किंग, बिक्री और बातचीत के लिए श्रेष्ठ दिन है, लेकिन तेजी के साथ आर्थिक अनुशासन जरूरी है।
**रिश्ते:** विविधता और स्वतंत्रता की जरूरत मजबूत रहेगी। संवाद पारदर्शी रखें ताकि सहजता रिश्ते में अनिश्चितता के बजाय ताजगी लाए।
**सावधानी:** जोखिमपूर्ण सट्टा, अचानक खरीदारी, जरूरत से ज्यादा प्रतिबद्धता और बार-बार दिशा बदलने से बचें।
**दिन बेहतर बनाएं:** सबसे उपयोगी अवसर चुनें, समझदारी से बातचीत करें और उसे पूरा करें।

### मूलांक 6
**धन व करियर:** दिन 5 आपकी जिम्मेदार और आराम पसंद प्रकृति में गति लाता है। नया क्लाइंट काम, यात्रा या आर्थिक योजना में बदलाव लाभ दे सकता है, यदि लाइफस्टाइल खर्च नियंत्रण में रहे।
**रिश्ते:** थोड़ी ताजगी निकटता बढ़ा सकती है। कुछ अलग योजना बनाएं या हल्के ढंग से संवाद करें, लेकिन व्यावहारिक जिम्मेदारियां न भूलें।
**सावधानी:** आराम के लिए खर्च, अधिक लिप्तता और ऐसी योजनाओं पर सहमति से बचें जो आर्थिक संतुलन बिगाड़ें।
**दिन बेहतर बनाएं:** स्थिरता से समझौता किए बिना एक ताजगी भरा बदलाव लाएं।

### मूलांक 7
**धन व करियर:** दिन 5 आपकी विश्लेषणात्मक प्रकृति को नई जानकारी और संपर्क खोजने के लिए प्रेरित करता है। शोध अवसर दिखा सकता है, लेकिन पर्याप्त तथ्य मिलने के बाद विकल्पों की तुलना में ही न अटके रहें।
**रिश्ते:** कभी स्पेस और कभी रोचक बातचीत की इच्छा हो सकती है। अचानक दूरी बनाने के बजाय अपनी जरूरत स्पष्ट बताएं।
**सावधानी:** मानसिक बेचैनी, संदेह और अधूरी जानकारी पर अचानक निर्णय से बचें।
**दिन बेहतर बनाएं:** समझदारी से खोजें, फिर एक अच्छी तरह जांचे विकल्प पर प्रतिबद्ध हों।

### मूलांक 8
**धन व करियर:** दिन 5 आपकी महत्वाकांक्षी ऊर्जा में गति और बातचीत की क्षमता बढ़ाता है। व्यवसायिक चर्चा, वसूली या व्यापारिक अवसर तेजी से आगे बढ़ सकते हैं, लेकिन संसाधन लगाने से पहले शर्तें ध्यान से जांचें।
**रिश्ते:** नियंत्रण की प्रवृत्ति आज की स्वतंत्र ऊर्जा से टकरा सकती है। सामने वाले को स्पेस दें और अपेक्षाएं थोपने के बजाय उन पर बात करें।
**सावधानी:** जोखिमपूर्ण डील, शक्ति संघर्ष और प्रतिष्ठा दिखाने के लिए खर्च से बचें।
**दिन बेहतर बनाएं:** लचीलेपन को व्यवसायिक ताकत बनाएं और एक महत्वपूर्ण निर्णय तथ्य पर टिकाकर लें।

### मूलांक 9
**धन व करियर:** दिन 5 आपकी उद्देश्यपूर्ण ऊर्जा में गति लाता है। बदलाव, यात्रा, बातचीत या नया संपर्क संसाधनों को अधिक अर्थपूर्ण लक्ष्य की ओर मोड़ने में मदद कर सकता है।
**रिश्ते:** किसी भावनात्मक विषय के बाद आप जल्दी आगे बढ़ना चाह सकते हैं। सुनिश्चित करें कि सामने वाले ने भी बात को समझने और स्वीकार करने का समय पाया है।
**सावधानी:** आवेग में उदारता, अचानक दूरी और गहरी भावनाओं से बचने के लिए लगातार व्यस्त रहने से बचें।
**दिन बेहतर बनाएं:** उद्देश्य के साथ आगे बढ़ें; भावनात्मक बोझ नहीं, उससे मिली सीख साथ रखें।

**कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes**
*Vediccodes - Your vibrations... our solutions*

# जीवन साथी और व्यापार का भाव है कुंडली का सप्तम भाव

जन्म कुंडली के सातवें भाव से जीवन साथी उसके स्वभाव, रंग रूप, व्यवहार

आदि का विश्लेषण किया जाता है। इसके अलावा व्यापार और व्यापार में होने वाली पार्टनरशिप का भी विचार सातवें भाव से किया जाता है। यहां से शरीर के गुप्त अंगों, यात्रा में रुकावट, मुकदमा, शत्रु पर विजय और संबंध आदि के विषयो में विचार किया जाता है।

जन्म कुंडली के प्रत्येक ग्रहों का सातवें भाव में प्रभाव :-

**सूर्य:** जन्म कुंडली के सातवें भाव में सूर्य हो तो जातक सरकार से जुड़कर काम करता है अथवा सरकारी नौकरी में जाता है। यहां बैठा सूर्य जातक को अनुशासित और तेजस्वी बनाता है। सप्तम का सूर्य होने से जीवन साथी स्वाभिमानी, जिद्दी और क्रोधी लेकिन धर्मनिष्ठ होता है। वैचारिक मतभेद कुछ बन सकते है।

व्यापार के हिसाब से भी यह अच्छा संयोग है सूर्य व्यक्ति को रत्नों, खानो और टेंडर से जुड़े व्यापार में सफलता दिलवाते है। जातक के गुप्तांगों में कुछ परेशानी या जलन की शिकायत हो सकती है।

**चंद्र:** सप्तम भाव में चंद्र होने से जातक को सुंदर, आकर्षक, मिलनसार किन्तु भावुक स्वभाव की जीवनसाथी होती है।

जातक जल या जल से जुड़े व्यापारों में सफलता प्राप्त करता है। यहां बैठा चन्द्र नाभि या पेट में शीत से संबंधित रोग देता है। सप्तम का चंद्रमा होने से जल वाले क्षेत्रों की यात्रा भी बहुत करवाता है।

**मंगल:** जन्म कुंडली के सप्तम भाव में मंगल होने से जातक मंगल दोष के प्रभाव से पीड़ित रहता है। जातक की जीवन संगनी भी क्रोधी, जिद्दी, गुप्तरोगी किन्तु ऊर्जावान और कामनी होती है। सप्तम में मंगल होने से जातक मेडिकल, भूमि, रियलस्टेट से जुड़े व्यापार में सफलता प्राप्त करता है। जातक को खुजली की शिकायत रहती है।

**बुध:** सप्तम में बुध होने से जातक एक कुशल व्यापारी होता है। जातक व्यापार में बुद्धि और विवेक का प्रयोग कर अपने व्यापार को बढ़ाता है। वहीं जातक की पत्नी भी चतुर,

बुद्धिमान, दिखने में कम उम्र की और बात करने में निपुण होती है।

पति-पत्नी का साझेदारी में व्यापार करना अत्यंत लाभकारी माना जाता है।

**गुरु:** सप्तम में बैठा गुरु हालांकि अकेला हो तो भाव नाश करता है फिर भी शुभ फलदाई माना जाता है। सप्तम में गुरु होने से जातक की जीवनसाथी धार्मिक, आध्यात्मिक, ज्ञानी, बुद्धिमान ,

**अच्छी शिक्षा प्राप्त करने वाली होती है।**

पत्नी कुलीन और प्रतिष्ठित परिवार से होती है। ऐसा जातक भी आध्यात्मिक और ज्ञानी होता है। सप्तम का गुरु शिक्षा और ज्ञान से जुड़े व्यापार जैसे कि गुरुकुल, स्कूल, लाइब्रेरी, ट्यूशन आदि के व्यापार में सफलता दिलाता है। यहां बैठा गुरु जातक को मोटा बनाता है।

**शुक्र:** सप्तम में शुक्र का होना अत्यंत शुभ माना गया है। जातक सौंदर्य प्रसाधन कपड़े, परफ्यूम, ब्यूटी पार्लर आदि व्यापार में सफलता प्राप्त करता है। वहीं सप्तम में शुक्र के होने से जातक का जीवन साथी अत्यंत सुन्दर, आकर्षक, गुणी, कलात्मक और प्रेम करने वाला होता है।

कई बार यहां बैठा शुक्र सफल प्रेम विवाह की ओर ले जाता है। हालांकि जीवन साथी खर्चीला और विलासी हो सकता है। जातक शुगर और दाग के रोग से परेशान हो सकता है।

**शनि:** सप्तम में शनि होने से जातक को उम्र में बड़ा और गंभीर स्वभाव वाला जीवन साथी प्राप्त होता है। हालांकि मेहनती और कम बोलचाल वाला होता है। और विवाह भी काफी देरी से होता है। लगभग 30-35 की उम्र। सप्तम में शनि कई बार दाम्पत्य जीवन में अलगाव और दूरी बनाता है लेकिन कुछ समय बाद सब ठीक करता है।सप्तम का शनि कमर से नीचे के हिस्सों में वात के रोग देता है।

**राहु:** सप्तम में राहु का होने से जातक आकर्षक होता है। जातक परम्परा से दूर अन्य जाति या विदेश में विवाह करता है। जातक का जीवनसाथी भी शकी, भ्रमित और अस्थिर मन वाला होता है। एक से अधिक लोगों की तरफ जातक और जातिका का आर्कषण हो सकता है जिस कारण तलाक की नौबत तक बन जाती है। सप्तम में राहु होने से जातक इंपोर्ट एक्सपोर्ट, ऑनलाइन, तकनीक, संचार आदि के व्यापार में सफलता प्राप्त करता है।

**केतु:** सप्तम में केतु होने से जातक का जीवन साथी आध्यात्मिक प्रवृति का होता है। अध्यात्म की ओर अधिक झुकाव होने से जातक से अलगाव रखता है। केतु कई बार विवाह में देरी करवाता है बाद में जीवन साथी के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहती है। व्यापार में यात्राएं काफी होती है और सफलता प्राप्त करता है। रिसर्च, ज्योतिष, रासायनिक चीजों का व्यापार जिनमें एकांत और मोटिवेशन की जरूरत होती है उनमें सफलता प्राप्त करता है।

**पंयोगेश पौराणिक**
**ज्योतिषाचार्य (इंजी)**

# दिवाली पर एक संकल्प: घर में दीप ही नहीं, रिश्तों में भी रोशनी जलाएँ.

दिवाली की असली रोशनी परिवार के साथ, क्योंकि घर दीवारों से नहीं, रिश्तों से बनता है

**लेख: एक सामाजिक दृष्टिकोण**

दिवाली केवल दीप जलाने, घर सजाने और मिठाइयाँ बाँटने का त्योहार नहीं है। यह अपने भीतर झाँकने, रिश्तों को समझने और जीवन में परिवार के वास्तविक महत्व को पहचानने का भी अवसर है। हर वर्ष जब दीपावली आती है, तो गलियाँ रोशनी से जगमगा उठती हैं, बाजारों में रौनक बढ़ जाती है और घरों में खुशियों का माहौल बन जाता है। लेकिन इस चमक-दमक के बीच एक सवाल भी उठता है—क्या हमारे घरों में दीपकों की रोशनी के साथ रिश्तों में भी उजाला बचा है?

आज का जीवन पहले की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक हो गया है। लोगों के पास मोबाइल है, इंटरनेट है, मनोरंजन के अनेक साधन हैं और जीवन को आसान बनाने वाली तमाम चीजें हैं। मगर इसी आधुनिकता के बीच परिवार के सदस्यों के पास एक-दूसरे के लिए समय कम होता जा रहा है। एक ही छत के नीचे रहने वाले लोग कभी-कभी अपनी-अपनी दुनिया में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अपनों के मन की बात सुनने तक का समय नहीं निकाल पाते। ऐसे में दिवाली हमें याद दिलाती है कि परिवार की असली समृद्धि महँगे सामान में नहीं, बल्कि आपसी प्रेम, सम्मान और अपनापन में होती है।

परिवार केवल साथ रहने का नाम नहीं, एक-दूसरे को समझने का रिश्ता है।

एक परिवार की नींव माता-पिता के त्याग, बुजुर्गों के अनुभव, भाई-बहनों के स्नेह और बच्चों की मुस्कान से बनती है। माता-पिता अपनी इच्छाओं को पीछे रखकर बच्चों के भविष्य के लिए जीवन भर मेहनत करते हैं। वे अपनी जरूरतों को छोटा करके बच्चों के सपनों को बड़ा बनाते हैं। उम्र बढ़ने के साथ जब उन्हें सहारे, सम्मान और कुछ समय की आवश्यकता होती है, तब परिवार की वास्तविक परीक्षा होती है।

दिवाली पर नए कपड़े खरीदना, घर में सजावट करना और उपहार देना अच्छी परंपराएँ हैं, लेकिन क्या हम अपने माता-पिता के पास बैठकर उनसे दो बातें करते हैं? क्या हम अपने बुजुर्गों को यह एहसास दिलाते हैं कि वे आज भी हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं? क्या हम अपने बच्चों को यह सिखाते हैं कि सफलता का अर्थ केवल पैसा कमाना नहीं, बल्कि अच्छा इंसान बनना भी है?

**इन प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक है।**

त्योहारों का एक उद्देश्य टूटते संबंधों को जोड़ना भी है। यदि परिवार में किसी बात को लेकर मनमुटाव है, तो दिवाली उससे आगे बढ़ने का अवसर बन सकती है। कभी-कभी एक छोटी-सी पहल वर्षों की दूरी मिटा देती है। किसी अपने को फोन करना, नाराज परिजन से बात करना, गलती होने पर क्षमा माँगना या बिना किसी स्वार्थ के किसी का हाल पूछ लेना भी दीपावली का सुंदर उपहार हो सकता है।

हमें यह भी समझना होगा कि हर परिवार की परिस्थितियाँ एक जैसी नहीं होतीं। कुछ घरों में आर्थिक कठिनाइयाँ हैं, कुछ परिवार अपनों से बिछड़ने का दर्द झेल रहे हैं और कुछ लोग जिम्मेदारियों के बोझ तले अपनी खुशियाँ भूल चुके हैं। ऐसे में दिवाली की सार्थकता तभी बढ़ती है, जब हमारी खुशियों में दूसरों के लिए भी जगह हो। किसी जरूरतमंद परिवार की सहायता करना, किसी अकेले बुजुर्ग के साथ समय बिताना या किसी निराश व्यक्ति को उम्मीद देना भी दीप जलाने जितना ही महत्वपूर्ण है।

**बच्चों को विरासत में केवल संपत्ति नहीं, संस्कार भी मिलने चाहिए।**

आज की पीढ़ी को यह बताना जरूरी है कि परिवार में मतभेद होना असामान्य नहीं, लेकिन मतभेद के कारण अपनों के प्रति सम्मान खो देना उचित नहीं है। रिश्ते हमेशा एक व्यक्ति के प्रयास से नहीं चलते; उनमें संवाद, धैर्य, विश्वास और एक-दूसरे की भावनाओं को समझने की जरूरत होती है। परिवार का मजबूत होना इस बात पर निर्भर नहीं करता कि उसमें कभी विवाद नहीं होते, बल्कि इस पर निर्भर करता है कि विवादों के बावजूद लोग एक-दूसरे का सम्मान बनाए रखते हैं या नहीं।

दीपावली हमें अंधकार पर प्रकाश की विजय का संदेश देती है। इस संदेश को अपने जीवन में उतारने का अर्थ है—मन से अहंकार का अंधकार दूर करना, व्यवहार से कटुता कम करना और रिश्तों में विश्वास का दीप जलाना। घर की सफाई के साथ यदि हम अपने विचारों और व्यवहार की भी सफाई कर सकें, तो त्योहार का अर्थ और गहरा हो जाएगा।

आइए, इस दिवाली हम केवल अपने घरों को नहीं, अपने संबंधों को भी सजाएँ। अपनों को महँगे उपहार देने से पहले उन्हें अपना समय दें। शिकायतों से पहले संवाद को चुनें, क्रोध से पहले धैर्य रखें और अधिकार जताने से पहले अपने कर्तव्यों को समझें।

क्योंकि अंततः जीवन की सबसे बड़ी पूँजी वह परिवार है, जिसके बीच हम बिना किसी दिखावे के अपने वास्तविक स्वरूप में रह सकते हैं।

इस दिवाली एक संकल्प लें—घर में दीपक अवश्य जलाएँ, लेकिन किसी अपने के मन में अंधेरा न रहने दें। खुशियाँ केवल अपने लिए नहीं, अपनों के साथ बाँटें। क्योंकि घर की असली रोशनी बिजली के बल्बों से नहीं, रिश्तों की गर्माहट से पैदा होती है।

**सत्यम मिश्रा**
**सोशल मीडिया विशेषज्ञ**
**उत्तर प्रदेश/ उत्तराखंड**

# बहादुरगढ़ में प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों पर परिवहन विभाग की सख्ती, 87 वाहनों के किए चालान

## जिला परिवहन विभाग की टीम ने ग्रेप-1 लागू होने के बाद जांच अभियान किया तेज

बिना तिरपाल निर्माण सामग्री ले जाने वालों पर भी सख्त कार्रवाई

परिवहन विशेष न्यूज

**बहादुरगढ़, 29 अक्टूबर।** राजधानी के साथ लगते झज्जर जिला में डीसी वर्षा खांगवाल और परिवहन आयुक्त हरियाणा के निर्देश अनुसार परिवहन विभाग द्वारा ग्रेप एक के चलते वायु प्रदूषण पर नियंत्रण लगाने के लिए वाहनों की जांच की जा रही है।

गुरुवार को जिला परिवहन अधिकारी रवीश हुडा के नेतृत्व में एडीटीओ राजेश मलिक की टीम द्वारा बहादुरगढ़ शहर के विभिन्न पेट्रोल पंपों पर विशेष जांच अभियान चलाया गया, जिसमें 87 वाहनों के चालान किए गए।

चैकिंग अभियान के दौरान पेट्रोल-डीजल भरवाने पहुंचे वाहनों के प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र की जांच की गई जांच में बिना वैध प्रमाणपत्र वाले 87 वाहन पाए गए, जिनके मौके पर ही चालान किए गए। संबंधित पेट्रोल पंप संचालकों ने भी इन वाहनों को ईंधन देने से मना कर दिया।

डीटीओ रवीश हुड्डा ने बताया कि इसके अलावा विभाग की टीम ने निर्माण सामग्री लादकर चलने वाले वाहनों की जांच की। बिना तिरपाल ढके निर्माण सामग्री का परिवहन करने वाले वाहनों के खिलाफ चालान की कार्रवाई की गई। विभाग के अनुसार, अब तक ऐसे 46 वाहनों के चालान किए जा चुके हैं। बिना तिरपाल निर्माण सामग्री ले जाने से सड़क पर धूल फैलती है, जिससे वायु प्रदूषण बढ़ता है।

**एंड ऑफ लाइफ वाहनों पर विभाग कर रहा सख्त कार्रवाई**

डीटीओ ने बताया कि परिवहन विभाग द्वारा निर्धारित आयु पूरी कर चुके वाहनों के खिलाफ भी कार्रवाई की जा रही है। अब तक ऐसे 269 वाहनों को जब्त किया जा चुका है। इस कार्रवाई का उद्देश्य प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के संचालन पर रोक लगाना और पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करना है।

उन्होंने बताया कि जिला परिवहन विभाग का उद्देश्य नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के खिलाफ कार्रवाई करने के साथ-साथ आमजन और ट्रांसपोर्टरों को प्रदूषण नियंत्रण के प्रति जागरूक करना तथा वायु गुणवत्ता में सुधार लाना है।

**दिल्ली में बीएस-6 से कम उत्सर्जन मानक वाले वाहनों के प्रवेश को लेकर एडवाइजरी जारी**

डीटीओ रवीश हुड्डा ने बताया कि परिवहन विभाग द्वारा लगाकर ट्रांसपोर्टरों को जागरूक किया जा रहा है। इसके साथ ही एडवाइजरी जारी कर निर्देशित किया गया है कि रविवार 1 नवंबर से बीएस -6 मानक से कम उत्सर्जन मानक वाले वाहन दिल्ली में प्रवेश न करें। ट्रांसपोर्टरों और वाहन संचालकों से अपील की गई है कि वे निर्धारित उत्सर्जन मानकों तथा दिल्ली में वाहनों के प्रवेश से संबंधित लागू दिशा-निर्देशों का पालन सुनिश्चित करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रदूषण नियंत्रण के लिए जांच अभियान भविष्य में भी लगातार जारी रहेगा। वाहन चालकों से अपील की कि वे अपने वाहनों का वैध पीयूसीसी प्रमाणपत्र बनवाकर रखें, निर्माण सामग्री को तिरपाल से ढककर ले जाएं और पर्यावरण संरक्षण में सहयोग करें।

## अनुसूचित जाति के पात्र व्यक्ति स्वरोजगार के लिए 2 लाख रुपये तक के ऋण हेतु 31 दिसंबर तक करें आवेदन : डीसी

### हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम की विभिन्न ऋण योजनाओं के तहत आवेदन आमंत्रित

**झज्जर, 29 अक्टूबर** हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम द्वारा अनुसूचित जाति के बेरोजगार व्यक्तियों को स्वरोजगार स्थापित करने और आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से विभिन्न ऋण योजनाओं के तहत आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। इन योजनाओं के माध्यम से पात्र व्यक्तियों को विभिन्न आय उपार्जन गतिविधियां शुरू करने के लिए 2 लाख रुपये तक का ऋण उपलब्ध करवाया जाएगा। यह जानकारी डीसी वर्षा खांगवाल ने गुरुवार को यहां दी। डीसी ने बताया कि योजनाओं का लाभ लेने के लिए आवेदक की परिवार पहचान पत्र (पीपीपी) के अनुसार वार्षिक पारिवारिक आय 3 लाख रुपये तक होनी चाहिए। आवेदक की आयु 18 से 45 वर्ष के बीच होनी चाहिए तथा वह हरियाणा का स्थायी निवासी होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, आवेदक किसी बैंक, सरकारी वित्तीय संस्था अथवा निगम का पूर्व में डिफाल्टर नहीं होना चाहिए। **विभिन्न योजनाओं के तहत मिलेगा ऋण:** डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम की बैंक टाईअप स्कीम के तहत अधिकतम 1 लाख 50 हजार रुपये, एनएसएफडीसी की सूक्ष्म वित्त योजना के तहत अधिकतम 1 लाख रुपये तथा सावधि ऋण योजना के तहत अधिकतम 2 लाख रुपये तक का ऋण उपलब्ध करवाया जाएगा। इसी प्रकार, एनएसकेएफडीसी योजना के अंतर्गत विभिन्न आय उपार्जन गतिविधियों के लिए 1 लाख रुपये से 2 लाख रुपये तक के ऋण हेतु आवेदन किया जा सकता है। **ऑनलाइन और सरल केंद्रों के माध्यम से करें आवेदन :** डीसी ने पात्र व्यक्तियों से आह्वान किया कि वे इन योजनाओं का लाभ उठाकर स्वरोजगार स्थापित करने की दिशा में कदम बढ़ाएं। इच्छुक व्यक्ति निगम की आधिकारिक वेबसाइट hscfdc.org.in के माध्यम से अथवा नजदीकी निगम कार्यालय, सरल केंद्र या सीएससी सेंटर पर जाकर आवेदन कर सकते हैं।

# पेंशनभोगी खजाना कार्यालय में 01 नवंबर से जमा करवाएं जीवन प्रमाणपत्र : डीटीओ

- ऑनलाइन प्रमाण पत्र स्मार्टफोन के माध्यम से हो सकते है जमा
- जिला कोषाधिकारी संजय फोगाट ने दी जानकारी

**झज्जर, 29 अक्टूबर।** जिला खजाना कार्यालय व उप खजाना कार्यालयों से पेंशन प्राप्त करने वाले सभी पेंशनभोगी अपना जीवन प्रमाण पत्र संबधित खजाना कार्यालय के साथ-साथ अन्य माध्यम से भी अपना जीवित होने का प्रमाण दर्ज करवा सकते हैं। ये जानकारी जिला कोषाधिकारी संजय फोगाट ने दी।

**कॉमन सर्विस सैंटर पर जमा करवा सकते है जीवन प्रमाण पत्र**

उन्होंने बताया कि यह सुविधा सभी डाकघरों द्वारा भी घर पर भी उपलब्ध करवाई जा रही है, जिसके लिए निर्धारित शुल्क का प्रावधान रखा गया हैं। यह ऑनलाइन जीवन प्रमाण पत्र सुविधा सभी कॉमन सर्विस सैंटरों व अटल सेवा केंद्रों पर भी उपलब्ध हैं। ऑनलाइन प्रमाण पत्र स्मार्टफोन के माध्यम से भी जमा करवाया जा सकता हैं। इस प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की कोई फीस का प्रावधान नहीं हैं, यह निशुल्क है।

**स्मार्टफोन से भी जमा करवा सकते है जीवन प्रमाण पत्र**

कोषाधिकारी ने बताया कि परिवार को कोई भी सदस्य अपने स्मार्टफोन के माध्यम से उक्त कार्य को स्वयं कर सकता हैं। इसके लिए जीवन प्रमाण पत्र फेस ऐप तथा दूसरा आधार फेस आरडी दोनों सॉफ्टवेयर प्ले स्टोर से अपने स्मार्टफोन से इंस्टाल करने होंगे तद-उपरांत किसी भी पेंशनर का जीवन प्रमाण पत्र ऑनलाइन माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि खजाना कार्यालय में आरंभिक दिनों में ज्यादा भीड़ ना बने इसके लिए आपको सूचित किया जाता है कि ज्यादा उम्रदराज सम्मानित बुजुर्ग अपने जीवन प्रमाण पत्र के लिए स्वयं आने पर विचार करें, ताकि आरंभिक दिनों में ज्यादा परेशानी से बचा जा सके।

**पेंशनभोगी ये दस्तावेज लेकर आए साथ**

पैंशनर अपने साथ आधार कार्ड (मूल प्रति), पैनकार्ड व पीपीओ की फोटो प्रति अवश्य साथ लेकर आएं तथा मोबाईल फोन जो पैंशन खाते से जुड़ा हो ओटीपी के लिए साथ लेकर आएं।

# युवा संवाद में 250 युवाओं ने ली लोकतांत्रिक शपथ

'विकसित भारत युवा संवाद : अपना वोट जानें' विषय पर युवाओं को किया जागरूक, लोकतंत्र में सक्रिय भागीदारी का दिया संदेश

**झज्जर, 29 अक्टूबर।** निकटवर्ती गांव ख़ातीवास स्थित संस्कारम पब्लिक स्कूल में मेरा युवा भारत की ओर से युवा संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 250 विद्यार्थियों एवं युवाओं ने भाग लिया और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए लोकतांत्रिक शपथ ली। यह जानकारी मेरा युवा भारत की उपनिदेशक अर्शदीप ने दी।

उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में यूथ आइकन दीक्षिता गुलिया ने 'विकसित भारत युवा संवादः अपना वोट जानें' विषय पर युवाओं को मतदान के महत्व, निर्वाचन प्रक्रिया और लोकतंत्र में उनकी भूमिका के बारे में जागरूक किया। वहीं, एशियन गेम्स में भाग ले चुकीं पूजा ने स्पोर्ट्स आइकन के रूप में युवाओं को प्रेरित किया। संवाद सत्र में विद्यार्थियों ने युवा सहभागिता, नागरिक जिम्मेदारियों और पहली बार मतदान करने वाले युवाओं की भूमिका पर विचार साझा किए।

उपनिदेशक ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के प्रति जागरूक कर राष्ट्र निर्माण में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना रहा। इस अवसर पर लेखा एवं कार्यक्रम अधिकारी जयशंकर, ज्योति, जसबीर, दीपक, दीपेंद्र, आकाश, ऋतु कुमार, हर्ष, रवि और हनी सहित अन्य उपस्थित रहे।

# समाधान शिविर में आमजन की समस्याओं का हो रहा प्रभावी समाधान : एडीसी

-जिलास्तरीय समाधान शिविर में एडीसी जगनिवास ने सुनीं समस्याएं

**झज्जर, 29 अक्टूबर।**

आमजन की समस्याओं का समयबद्ध एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन पूरी सजगता व गंभीरता के साथ कार्य कर रहा है। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में जिला व उपमंडल स्तर पर आयोजित किए जा रहे समाधान शिविर नागरिकों की समस्याओं के निवारण के लिए प्रभावी मंच साबित हो रहे हैं। यह बात एडीसी जगनिवास ने गुरुवार को लघु सचिवालय सभागार में आयोजित समाधान शिविर में जनसुनवाई के दौरान कही। उन्होंने शिविर में पहुंचे नागरिकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए।

**आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावी माध्यम उपलब्ध करवाना ही उद्देश्य**

एडीसी ने कहा कि प्रत्येक सोमवार और गुरुवार को आयोजित होने वाले समाधान शिविरों का उद्देश्य नागरिकों को उनकी समस्याओं के समाधान के लिए सरल और प्रभावी माध्यम उपलब्ध करवाना है। इन शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी एक ही स्थान पर उपस्थित रहते हैं, जिससे नागरिकों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए अलग-अलग कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार अंत्योदय की भावना के साथ जनसेवा को प्राथमिकता दे रही है। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की सोच के अनुरूप प्रशासन का प्रयास है कि प्रत्येक नागरिक की समस्या को गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ सुना जाए तथा उसका शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जाए।

**अधिकारी लंबित शिकायतों का आपसी समन्वय से तत्काल करें समाधान**

एडीसी जगनिवास ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा समाधान शिविरों में प्राप्त शिकायतों की लगातार निगरानी की जा रही है। अब तक प्राप्त अधिकांश शिकायतों का समाधान किया जा चुका है, जबकि लंबित शिकायतों के निपटारे के लिए संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि शिकायतों को केवल दर्ज करने तक सीमित न रखें, बल्कि उनके समाधान की प्रक्रिया पर भी नियमित नजर रखें।

**आयुष्मान कार्ड, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, परिवार पहचान पत्र से जुड़े मामले पहुंचे**

समाधान शिविर में नागरिक परिवार पहचान पत्र, आयुष्मान कार्ड, सामाजिक सुरक्षा पेंशन सहित विभिन्न सरकारी योजनाओं से संबंधित समस्याएं लेकर पहुंचे। इसके अलावा पुलिस विभाग से जुड़े मामलों को भी नागरिकों ने अधिकारियों के समक्ष रखा। एडीसी ने संबंधित अधिकारियों को प्रत्येक मामले की गंभीरता से जांच कर नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए। कई मामलों में मौके पर ही आवश्यक समाधान सुनिश्चित किया गया।

एडीसी ने कहा कि समाधान शिविरों का उद्देश्य केवल शिकायतों को सुनना नहीं, बल्कि नागरिकों को प्रभावी समाधान उपलब्ध करवाना है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आमजन की समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहते हुए निर्धारित समय में कार्रवाई पूरी करें।

यह रहे मौजूद

इस अवसर पर जिला परिषद के सीईओ मनीष फौगाट, सीटीएम ऋतु, डीडीपीओ निशा तंवर, एडीटीओ राजेश मलिक, एक्सईएन पंचायती राज युद्धवीर सिंह, एमिनेन्ट पर्सन चुन्नी लाल सैनी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

# अखिल भारतीय सेवा संघ महिला शाखा बरवाला ने धूमधाम से मनाया करवा चौथ पर्व, महिलाओं ने दी रंगारंग प्रस्तुतियां

परिवहन विशेष न्यूज

**हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा)** अखिल भारतीय सेवा संघ महिला शाखा बरवाला की ओर से भारत धर्मशाला में करवा चौथ पर्व बड़े ही धूमधाम, उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और पारंपरिक वेशभूषा में अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। इस दौरान तंबोला सहित विभिन्न मनोरंजक गेम्स का आयोजन किया गया तथा विजेताओं को उपहार देकर सम्मानित किया गया। महिलाओं ने शानदार नृत्य प्रस्तुतियां देकर कार्यक्रम को यादगार बना दिया।

कार्यक्रम में संरक्षक वीना चुघ ने अपने संबोधन में कहा कि महिलाओं को अपने व्यस्त जीवन में से थोड़ा समय निकालकर ऐसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों में अवश्य भाग लेना चाहिए। इस तरह के कार्यक्रम महिलाओं को आपस में जुड़ने, अपनी प्रतिभा दिखाने और आपसी प्रेम व भाईचारे को मजबूत करने का अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने भगवान से कामना की कि सभी महिलाओं के जीवन में सुख, शांति और खुशहाली बनी रहे।

इस आयोजन में भारत विकास परिषद विवेकानंद शाखा ने भी सहयोग दिया। कार्यक्रम की प्रोजेक्ट चेयरमैन अंजू रहेजा और अनीता कक्कड़ रहीं। कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला शाखा की सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रमुख समाजसेवी निशु वधवा ने कहा कि भारतीय संस्कृति में करवा चौथ जैसे पर्व पारिवारिक प्रेम, आपसी विश्वास और सामाजिक एकता का संदेश देते हैं। महिलाओं के लिए ऐसे आयोजन मनोरंजन के साथ-साथ अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़े रहने का माध्यम भी हैं। उन्होंने कहा कि समाजसेवा के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है और महिलाएं सामाजिक कार्यों के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। ऐसे आयोजन महिलाओं में उत्साह, आत्मविश्वास और आपसी सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हैं।

इस अवसर पर संरक्षक वीना चुघ, अध्यक्ष आशा रहेजा, सचिव सिमरन पाहुजा, कोषाध्यक्ष निशु वधवा, कृष्णा सरदाना, सीमा कठपाल, अंजू रेलन, अलका भूटानी, संगीता मेहंदी रत्ता, रीमा, आशा चुघ, मंजू सरदाना, सुनीता मनचंदा, प्रीति चुघ, राज आनंद सहित अनेक प्रमुख समाजसेवी महिलाएं उपस्थित रहीं। सभी महिलाओं ने मिलकर पर्व की खुशियां साझा कीं और कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया।

## वरिष्ठ नागरिकों के लिए जारी मंत्रालय का अभियान जागरूकता के लिए कानपुर में हुआ कार्यशाला का आयोजन

सुनील बाजपेई

**कानपुर।** केंद्र की भाजपा सरकार देश के बुजुर्गों की समस्याओं के खिलाफ सेवा और सहायता में भी कोई कोर कसर बाकी नहीं रख रही है। जिसके लिए कार्यशालाओं और कार्यक्रमों के रूप में आयोजनों का भी दौर लगातार जारी है। इसी क्रम में भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय से अधिकृत शिवा ग्रामोद्योग सेवा संस्थान के क्षेत्रीय संसाधन प्रशिक्षण केंद्र (आर आर टी सी), उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में 125 वृद्धजनों ने भाग लिया।

रामा अस्पताल एवं रिसर्च सेंटर, लखनपुर में डिमेंशिया एवं अल्ज़ाइमर रोग के खिलाफ आयोजित इस विस्तृत जागरूकता कार्यक्रम का उद्देश्य वृद्धजनों और उनके परिवारों को उम्र बढ़ने के साथ स्मरण शक्ति में होने वाले बदलावों, डिमेंशिया एवं अल्ज़ाइमर के संभावित लक्षणों और देखभाल के तरीकों के बारे में जागरूक करना था। जिसमें कार्यशाला के आयोजक पूर्ण रूप से सफल भी रहे। वृद्ध लोगों के कल्याण के लिए समस्याओं के खिलाफ आयोजित इस कार्यक्रम में मंत्रालय की वरिष्ठ नागरिक कल्याण संबंधी पहल के अनुरूप जागरूकता, क्षमता निर्माण और सामुदायिक सहयोग के महत्व पर भी जोर दिया गया।

कार्यशाला में पहुंचे अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. ज्ञानेंद्र भदौरिया, यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व शुक्ला, गैस्ट्रो सर्जन डॉ. तरुण, मनोचिकित्सक डॉ. अर्नब देब, कम्युनिटी मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. चंदन तिवारी एवं डॉ. एच.सी. पालिवाल तथा नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. डी.के. सिन्हा आदि चिकित्सा विशेषज्ञों ने रोग की पहचान, संभावित कारणों, जोखिम कम करने के उपायों और परिवार की जिम्मेदारी , परिवार के सदस्यों को वृद्धजनों के व्यवहार एवं स्मरण शक्ति में होने वाले बदलावों को समझने, जरूरत पड़ने पर चिकित्सकीय सहायता लेने और प्रभावित व्यक्ति के साथ धैर्यपूर्ण व्यवहार करने आदि से जुड़े विषयों पर विस्तार पूर्वक जानकारी देकर लोगों को जागरूक किया।

शिवा ग्रामोद्योग सेवा संस्थान के संस्थापक एवं सचिव राजेंद्र सिंह नेतृत्व में वृद्ध जनों की समस्याओं के खिलाफ कल्याण के लिए भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के आदेश निर्देश और बुजुर्गों के हित में कल्याणकारी पहल पर आयोजित इस कार्य शाला के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों को सम्मान जनक जीवन देने के लिए स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता, परिवार का सहयोग और समाज की भागीदारी जैसा संदेश भी दिया गया। कार्यक्रम में चार्टर्ड अकाउंटेंट नवीन भार्गव और सामाजिक कार्यकर्ता उदय नारायण त्रिपाठी आदि की भी सहभागिता रही।

# परिवहन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की पहल, रूटवार ट्रांसपोर्टरों की सूची संयंत्रों को भेजेगा राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन

## सदस्यता, कार्यक्षेत्र और पारदर्शिता के आधार पर नामों की अनुशंसा का निर्णय; शांतिपूर्ण माहौल और स्वतंत्र व्यापार को बढ़ावा देने पर जोर

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

औद्योगिक परिवहन व्यवस्था को अधिक सुव्यवस्थित, पारदर्शी और अनुशासित बनाने की दिशा में राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन (RGTA) ने महत्वपूर्ण पहल की है।

एसोसिएशन की आवश्यक बैठक में विभिन्न संयंत्रों और लोडिंग प्वाइंटों पर परिवहन कार्य से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा की गई।

बैठक में निर्णय लिया गया कि संबंधित रूट पर वास्तविक रूप से कार्यरत और एसोसिएशन से संबद्ध ट्रांसपोर्टरों के नामों की अनुशंसा संबंधित संयंत्रों को भेजी जाएगी।

बैठक में इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि औद्योगिक परिवहन क्षेत्र में कार्य की पहचान, रूटवार जिम्मेदारी और सदस्यता के आधार पर एक व्यवस्थित व्यवस्था विकसित की जाए।

जिस रूट पर जो ट्रांसपोर्टर नियमित रूप से कार्य कर रहे हैं और जो एसोसिएशन के सदस्य हैं, उन्हीं के नाम संबंधित कार्यक्षेत्र के लिए अनुशंसित किए जाएंगे। वहीं, संबंधित रूट पर कार्य नहीं करने वाले अथवा एसोसिएशन से संबद्ध नहीं रहने वाले व्यक्तियों के नामों की अनुशंसा नहीं करने का निर्णय लिया गया।

औद्योगिक परिवहन में पारदर्शिता और अनुशासन पर बल राउरकेला और आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों में कच्चे माल, लौह अयस्क, इस्पात उत्पादों तथा अन्य औद्योगिक सामग्रियों की ढुलाई उत्पादन और आपूर्ति श्रृंखला का महत्वपूर्ण आधार है।

ऐसे में परिवहन कार्यों का व्यवस्थित संचालन, ट्रांसपोर्टरों के बीच समन्वय और लोडिंग प्वाइंटों पर स्पष्ट कार्यप्रणाली उद्योगों के साथ-साथ परिवहन व्यवसाय से जुड़े लोगों के हित में भी आवश्यक है।

बैठक में शांतिपूर्ण कार्य वातावरण, अनुशासन और स्वतंत्र व्यापार व्यवस्था को प्रोत्साहित करने पर सहमति बनी।

एसोसिएशन का उद्देश्य परिवहन गतिविधियों को अनावश्यक विवादों से दूर रखते हुए निर्धारित कार्यक्षेत्र में बेहतर समन्वय स्थापित करना और व्यवसाय के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण को बढ़ावा देना बताया गया।

बैठक में आरजीटीए अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव, चंदन बेहरा, प्रशांत पाणी, गौरी शंकर यादव, मुनिन्द्र सिँह, जगन्नाथ पंडा, गोविन्द अग्रवाल, राजेश जेथलिया, कृष्ण कांत सिँह सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

अंत में प्रसाद पानी ने उपस्थित सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया, जिसके बाद बैठक स्थगित कर दी गई।

औद्योगिक विकास की गति बनाए रखने में परिवहन क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है। ऐसे में रूटवार पहचान, स्पष्ट जिम्मेदारी, आपसी सहयोग और नियमसम्मत कार्यप्रणाली को लेकर एसोसिएशन की यह पहल परिवहन व्यवस्था को अधिक संगठित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है।

# 'कैमूर' आईएमए कैमूर शाखा द्वारा स्तन कैंसर जागरूकता रैली का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

**भभुआ, 29 अक्टूबर 2026।**

विश्व स्तन कैंसर जागरूकता माह के अवसर पर इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (IMA), भभुआ-कैमूर (बिहार) शाखा द्वारा गुरुवार, 29 अक्टूबर 2026 को प्रातः 7:00 बजे स्तन कैंसर जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली सदर अस्पताल, भभुआ से प्रारंभ होकर एकता चौक तक निकाली गई। रैली को कैमूर के सिविल सर्जन डॉ चंद्रेश्वरी रजक ने हरी झंडी दिखा रवाना किया। संचालन आईएमए के सचिव डॉ संतोष कुमार सिंह ने किया।

इस रैली का मुख्य उद्देश्य आम जनमानस को स्तन कैंसर के प्रति जागरूक करना, बीमारी की समय रहते पहचान के महत्व को समझाना तथा महिलाओं को नियमित स्वास्थ्य जांच और आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श के लिए प्रेरित करना था।स्तन कैंसर महिलाओं में होने वाले प्रमुख कैंसरों में से एक है। लेकिन चिंता की बात केवल बीमारी का होना नहीं है, बल्कि यह है कि आज भी अनेक महिलाएँ जानकारी के अभाव, सामाजिक संकोच, डर और परिवार की उपेक्षा के कारण समय पर चिकित्सक के पास नहीं पहुँच पाती हैं।

यह भी समझना आवश्यक है कि स्तन में हर गाँठ कैंसर नहीं होती, लेकिन हर नई या असामान्य गाँठ की जाँच जरूर होनी चाहिए। स्तन की त्वचा में बदलाव, निप्पल का अंदर की ओर खिंचना या बिना कारण रक्तमिश्रित स्राव जैसे लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

यदि स्तन कैंसर की पहचान शुरुआती अवस्था में हो जाए, तो उपचार के बेहतर परिणाम मिलने की संभावना काफी बढ़ जाती है। इसलिए लक्षणों के प्रति जागरूकता, चिकित्सकीय परीक्षण और उम्र एवं व्यक्तिगत जोखिम के अनुसार उचित स्क्रीनिंग अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। नियमित स्वास्थ्य परीक्षण कराएँ और किसी भी असामान्य बदलाव पर योग्य चिकित्सक से परामर्श लें।

*स्तन कैंसर की समय पर पहचान और उचित उपचार से इसके सफल इलाज की संभावनाएं काफी बढ़ जाती हैं।* महिलाओं को स्तन में किसी भी असामान्य बदलाव, गांठ या अन्य संदिग्ध लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए तथा समय रहते चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए। साथ ही, समाज में स्तन कैंसर से जुड़ी भ्रांतियों और झिझक को दूर करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया। स्क्रीनिंग की सुविधा सदर अस्पताल भभुआ में उपलब्ध है।

रैली के माध्यम से लोगों को यह संदेश दिया गया कि स्तन कैंसर के विरुद्ध जागरूकता, समय पर जांच और सामूहिक सहयोग बेहद महत्वपूर्ण हैं। महिलाओं के स्वास्थ्य की रक्षा केवल परिवार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की जिम्मेदारी है।

आईएमए कैमूर शाखा ने इस जन-जागरूकता अभियान के माध्यम से समाज के सभी वर्गों से अपील की कि वे स्तन कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाने में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें और महिलाओं को समय पर जांच एवं उपचार के लिए प्रोत्साहित करें। जागरूकता रैली में शामिल अन्य में डॉ अशोक कुमार सिंह, डॉ आर के चौधरी, डॉ त्रिभुवन नारायण, डॉ एस के मांझी, डॉ विभूति भूषण, डॉ साहिल राज सहित आईएमए कैमूर के चिकित्सक व होमी भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान के चिकित्सक, बाल्मीकि सिंह, चंचल तिवारी, विजयमल सिंह, नितीश कुमार सहित नर्सिंग कॉलेज की सैकड़ों छात्राएं शामिल रहीं।

*संदेशः* "जागरूकता अपनाएं, समय पर जांच कराएं—स्तन कैंसर के विरुद्ध जीवन बचाएं।"

**डॉ संतोष कुमार सिंह**
**चेयरमैन, आईएमए**
**एमएसएन बिहार**
**सचिव आईएमए कैमूर**
**संतोष कुमार चतुर्वेदी**

# चुनावी शंखनाद - 5 राज्यों में अधिकारी तबादला निर्देश

## ECI Letter 27 Oct 2026 - निष्पक्ष चुनाव के लिए गृह जनपद में पोस्टिंग नहीं

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

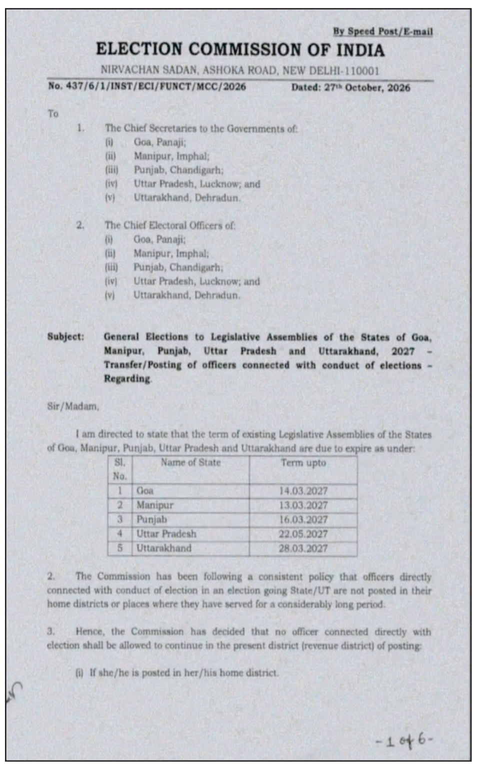

By Speed Post/E-mail

ELECTION COMMISSION OF INDIA
NIRVACHAN SADAN, ASHOKA ROAD, NEW DELHI-110001

No. 437/6/1/INST/ECI/FUNCT/MCC/2026 Dated: 27th October, 2026

To

1. The Chief Secretaries to the Governments of:
(i) Goa, Panaji;
(ii) Manipur, Imphal;
(iii) Punjab, Chandigarh;
(iv) Uttar Pradesh, Lucknow; and
(v) Uttarakhand, Dehradun.

2. The Chief Electoral Officers of:
(i) Goa, Panaji;
(ii) Manipur, Imphal;
(iii) Punjab, Chandigarh;
(iv) Uttar Pradesh, Lucknow; and
(v) Uttarakhand, Dehradun.

Subject: General Elections to Legislative Assemblies of the States of Goa, Manipur, Punjab, Uttar Pradesh and Uttarakhand, 2027 - Transfer/Posting of officers connected with conduct of elections - Regarding

Sir/Madam,

I am directed to state that the term of existing Legislative Assemblies of the States of Goa, Manipur, Punjab, Uttar Pradesh and Uttarakhand are due to expire as under:

| Sl. No. | Name of State | Term upto |
|---|---|---|
| 1 | Goa | 14.03.2027 |
| 2 | Manipur | 13.03.2027 |
| 3 | Punjab | 16.03.2027 |
| 4 | Uttar Pradesh | 22.05.2027 |
| 5 | Uttarakhand | 28.03.2027 |

2. The Commission has been following a consistent policy that officers directly connected with conduct of election in an election going State/UT are not posted in their home districts or places where they have served for a considerably long period.

3. Hence, the Commission has decided that no officer connected directly with election shall be allowed to continue in the present district (revenue district) of posting:

(i) If she/he is posted in her/his home district.

-1 of 6-

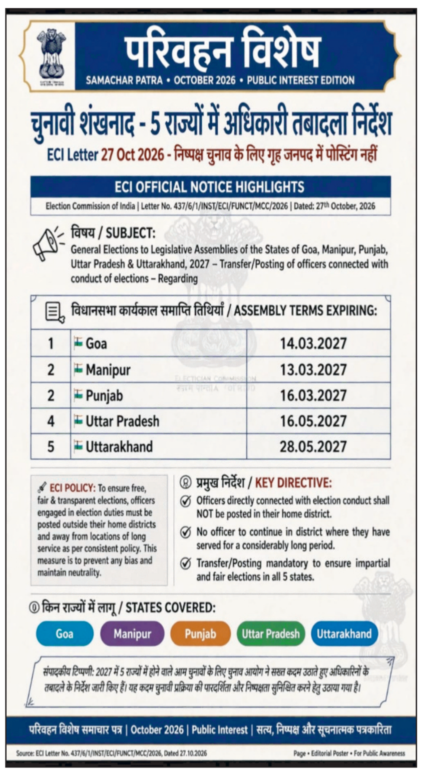

परिवहन विशेष
SAMACHAR PATRA • OCTOBER 2026 • PUBLIC INTEREST EDITION

चुनावी शंखनाद - 5 राज्यों में अधिकारी तबादला निर्देश
ECI Letter 27 Oct 2026 - निष्पक्ष चुनाव के लिए गृह जनपद में पोस्टिंग नहीं

ECI OFFICIAL NOTICE HIGHLIGHTS
Election Commission of India | Letter No. 437/6/1/INST/ECI/FUNCT/MCC/2026 | Dated: 27th October, 2026

विषय / SUBJECT:
General Elections to Legislative Assemblies of the States of Goa, Manipur, Punjab, Uttar Pradesh & Uttarakhand, 2027 – Transfer/Posting of officers connected with conduct of elections – Regarding

विधानसभा कार्यकाल समाप्ति तिथियां / ASSEMBLY TERMS EXPIRING:

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Goa | 14.03.2027 |
| 2 | Manipur | 13.03.2027 |
| 2 | Punjab | 16.03.2027 |
| 4 | Uttar Pradesh | 16.05.2027 |
| 5 | Uttarakhand | 28.05.2027 |

ECI POLICY: To ensure free, fair & transparent elections, officers engaged in election duties must be posted outside their home districts and away from locations of long service as per consistent policy. This measure is to prevent any bias and maintain neutrality.

प्रमुख निर्देश / KEY DIRECTIVE:
Officers directly connected with election conduct shall NOT be posted in their home district.
No officer to continue in district where they have served for a considerably long period.
Transfer/Posting mandatory to ensure impartial and fair elections in all 5 states.

किन राज्यों में लागू / STATES COVERED:
Goa Manipur Punjab Uttar Pradesh Uttarakhand

संपादकीय टिप्पणी: 2027 में 5 राज्यों में होने वाले आम चुनावों के लिए चुनाव आयोग ने सख्त कदम उठाते हुए अधिकारियों के तबादले के निर्देश जारी किए हैं। यह कदम चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने हेतु उठाया गया है।

परिवहन विशेष समाचार पत्र | October 2026 | Public Interest | सत्य, निष्पक्ष और सूचनात्मक पत्रकारिता

Source: ECI Letter No. 437/6/1/INST/ECI/FUNCT/MCC/2026, Dated 27.10.2026
Page • Editorial Poster • For Public Awareness

**पत्र का विवरणः**

- जारीकर्ताः भारत निर्वाचन आयोग, निर्वाचन सदन, अशोका रोड, नई दिल्ली
- पत्रांकः No. 437/6/1/INST/ECI/FUNCT/MCC/2026, दिनांकः 27 अक्टूबर 2026
- प्रेषितः गोवा, मणिपुर, पंजाब, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के मुख्य सचिवों व मुख्य निर्वाचन अधिकारियों को

**मुख्य तथ्य - विधानसभा कार्यकाल समाप्तिः**

1. गोवा - 14.03.2027
2. मणिपुर - 13.03.2027
3. पंजाब - 16.03.2027
4. उत्तर प्रदेश - 22.05.2027 (पत्र में 16.05.2027 टाइप त्रुटि है, वास्तविक 22.05.2027)
5. उत्तराखंड - 28.03.2027 (पत्र में 28.05.2027 टाइप है, वास्तविक 28.03.2027 के आसपास)

**मुख्य बिंदु और नीतिः** चुनाव आयोग की सतत नीति रही है कि चुनाव से सीधे जुड़े अधिकारी अपने गृह जनपद में या जहाँ वे लंबे समय से तैनात हैं, वहाँ तैनात न रहें। इससे निष्पक्षता बनी रहे और पक्षपात की संभावना न रहे।

**प्रमुख निर्देशः**

- कोई भी चुनाव से जुड़ा अधिकारी अपने गृह जिले (revenue district) में तैनात नहीं रहेगा।
- जहाँ लंबे समय से तैनात हैं, वहाँ से हटाया जाएगा।
- यह 5 राज्यों के सभी राजस्व जिलों के लिए अनिवार्य तबादला नीति है।

**जनहित में संपादकीय टिप्पणीः**

2027 के आम चुनावों से पहले यह कदम चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए है। मतदाताओं को भरोसा रहे कि प्रशासनिक अधिकारी तटस्थ हैं।

*स्रोतः ECI Letter 27.10.2026*

# राउरकेला में सरेआम सैकड़ों मूल्यवान पेड़ों की कटाई से मचा हड़कंप

**विधायक – रघुनाथपाली ने जताई नाराजगी, दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग**
**वन विभाग की जानकारी के बिना पेड़ों की कटाई पर उठे गंभीर सवाल, आखिर किसके आदेश पर उजाड़ा गया हरित क्षेत्र?**

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला।

इस्पात नगरी राउरकेला में पर्यावरण संरक्षण और वन विभाग की कार्यप्रणाली को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं।

रघुनाथपाली विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत सेक्टर-15 से सेक्टर-13 एवं 14 होते हुए लुआकेरा गांव जाने वाली सड़क के किनारे तथा नंदगांव गोशाला के पास स्थित परित्यक्त पशु चिकित्सालय और उसके सामने से गुजरने वाले मुख्य मार्ग के किनारे मंगलवार दोपहर कथित तौर पर सैकड़ों मूल्यवान पेड़ों की कटाई किए जाने का मामला सामने आया है।

घटना ने स्थानीय लोगों के बीच चिंता पैदा कर दी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, कुछ लोग मौके पर पेड़ काट रहे थे। स्थानीय लोगों ने जब उनसे इस कटाई का कारण पूछा, तो उन्होंने कथित तौर पर सड़क निर्माण के लिए पेड़ काटे जाने की बात कही। साथ ही, उन्होंने यह भी बताया कि यह काम जाकिर नामक व्यक्ति के निर्देश पर किया जा रहा है। हालांकि, संबंधित व्यक्ति कौन है, उसे पेड़ काटने का अधिकार किसने दिया और इसके लिए सक्षम प्राधिकारी से अनुमति ली गई थी या नहीं, इन सवालों का अभी तक स्पष्ट उत्तर सामने नहीं आया है।

मामले की जानकारी मिलने पर रघुनाथपाली के विधायक एवं जिला योजना बोर्ड के अध्यक्ष ने राउरकेला के प्रभागीय वन अधिकारी (डीएफओ) से संपर्क किया। बताया गया कि डीएफओ ने इस घटना की जानकारी होने से इनकार किया।

इसके बाद विधायक ने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को मामले की तत्काल जांच कर दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने की सलाह दी।

गौरतलब है कि राज्य सरकार पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र के विस्तार के लिए प्रतिवर्ष बड़े पैमाने पर पौधरोपण अभियान चलाती है तथा उनकी सुरक्षा पर करोड़ों रुपये खर्च करती है। ऐसे में इस्पात नगरी में कथित तौर पर सैकड़ों पेड़ों की कटाई और वन विभाग को इसकी जानकारी नहीं होने का दावा व्यवस्था की निगरानी पर सवाल खड़ा करता है।

अब सबसे अहम सवाल यह है कि पेड़ों की कटाई के पीछे वास्तविक जिम्मेदार कौन है?

* क्या सड़क निर्माण के नाम पर विधिवत अनुमति ली गई थी, या नियमों को दरकिनार कर हरित संपदा को नुकसान पहुंचाया गया?

इन सवालों का जवाब निष्पक्ष जांच से ही सामने आएगा।

स्थानीय नागरिकों को उम्मीद है कि प्रशासन मामले को गंभीरता से लेते हुए दोषियों की पहचान करेगा और पर्यावरण को हुए नुकसान के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करेगा।

# साइंटिफिक-एनालिसिस की सोच पर आये बिना अब दुनिया में लोकतन्त्र नहीं बचेगा!

लेखक शैलेन्द्र कुमार बिराणी

**'युवा वैज्ञानिक"**
**प्रस्तुतिकर्ताः भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी'**

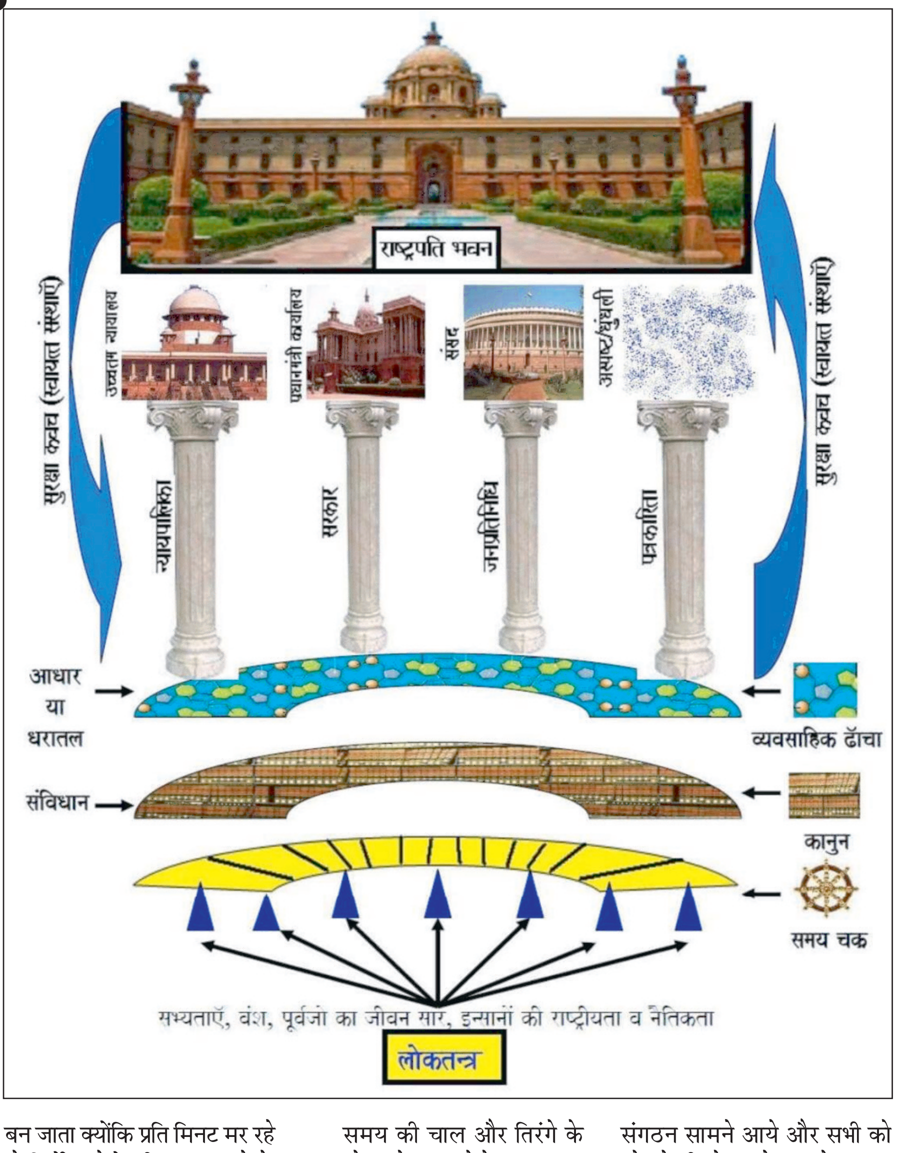


पहले हम सिर्फ भारत के लोकतन्त्र की बात कर रहे थे और प्रमाणिकता के तौर पर हमने लिखित व दस्तावेजों सहित आधिकारिक रूप से भारत के राष्ट्रपति को भेजा! अब समय बर्बादी और परिस्थितियों के कारण हालात ऐसे बन गये की दुनिया के सभी लोकतन्त्र खत्म होने की दहलीज तक पहुंच गये! अल्बानिया में सुप्रीम कोर्ट को जला देना, संसद पर हमला करना, स्पेन, फ्रांस, बेल्जियम, इटली, ग्रीस में चल रहे विरोध वर्तमान लोकतन्त्र में व्यापक कमीयों को उजागर करते हैं!

इससे पहले नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका का विरोध देखा व वहां की सरकारों को बदलते देखा! वर्तमान में जर्मनी में सरकार बदल गई! इनके अलावा कहीं देशों में सरकारों को हटाने के लिए विरोध व प्रदर्शन चल रहे हैं! साइंटिफिक-एनालिसिस ने पहले ही इन विरोधों की तुलना भारत के जे. पी. आन्दोलन वाली सोच से करी! यहां एक राजनैतिक दल की सरकार जाती हैं तो दूसरे राजनैतिक दल की सरकार आ जाती हैं। भारत में भी राजनैतिक दलों का प्रयोग काकरोच जनता पार्टी के साथ उसी सोच के स्तर के साथ हो रहा हैं! इससे मूल समस्या खत्म नहीं होने वाली है क्योंकि अब समस्या व्यवस्था से जुड़ी है और कानून बनाना भी उसी व्यवस्था का हिस्सा है!

भारत में मुख्य चुनाव आयुक्त को सर्वोच्च संवैधानिक पद राष्ट्रपति से अधिक इम्यूनिटी देने का कानून बनाना इसका ज्वलंत उदाहरण है! इस तरह का कानून बनाना एक असंवैधानिक कदम है! किसी के पीछे दौड़कर कभी भी रेस में प्रथम नहीं आ सकते और जो तरिका एक बार इस्तेमाल हो गया उसे दुबारा इस्तेमाल करके बदलाव नहीं ला सकते! अब दुनियाभर के लोकतन्त्र को बचाने के लिए एक अलग ही मार्ग पर चलना होगा जो हिंसा, तोड़फोड़, कानूनी शिकंजे से परे हो व जिसका इस्तेमाल भी पहली बार हो!

ऐसा एकमात्र उपाय जो विज्ञान की तकनीक व सिद्धान्तों पर परखा हो उसे 2011 में ही भारत के राष्ट्रपति को भेज दिया था! यह हमारे पेटेंटेड आविष्कार के साथ अन्तिम फैसले के लिए कानूनी व संवैधानिक रूप से राष्ट्रपति को अधिकृत कर चुका हैं। आज तक अन्तिम फैसला नहीं लिया! यदि अन्तिम फैसला ले लिया जाता तो भारत कभी का विकसित व विश्वगुरु बन जाता क्योंकि प्रति मिनट मर रहे दो निर्दोष लोगों की जान बचाने के साथ पूरी दुनिया को स्वस्थ, मजबूत व लूपपोल रहित लोकतांत्रिक व्यवस्था बनाने का मार्ग सिखाता!

राष्ट्रपति के इस फैसले में देरी कई देशों में हिंसक प्रदर्शन की शुरुआत करवा चुका हैं और भारत भी इसी विनाशक, हिंसक, जन-धन की व्यापक हानि के चुंगल में फंसने वाला है! इसके साथ भारत के पास दुबारा विश्वगुरु बनने का अनमोल अवसर आया है वो भी हमेशा के लिए हाथ से निकल जायेगा! पहले 2020 फिर 2047 में भारत को विकसित बनाने की बात सिर्फ जुमला और लोगों को टोपी पहनाकर अपना काम निकालने की राजनीति हैं क्योंकि आजतक इसमें प्रमाणिकता के कोई दस्तावेज़ व योजना की रूप रेखा दी ही नहीं है! हम विकसित बनाने की सिर्फ गपबाजी नही करी अपितु राष्ट्रपति को दुनियाभर के दस्तावेजों के साथ सभी प्रमाण दिये हैं! यदि राष्ट्रपति ने समय पर फैसला ले लिया होता तो भारत 2020 से पहले ही विकसित देश बन चुका होता!

समय की चाल और तिरंगे के चक्र के आगे बढ़ जाने के कारण अब रास्ता सिर्फ संविधान व उसकी मूल भावना को बदलें बिना उसे ग्राफिक्स रूप में बदलना है! इसका एक प्रारूप हमने राष्ट्रपति को भेज रखा है जिस पर राष्ट्रपति सचिवालय की मोहर व आधिकारिक साईन वाला दस्तावेज हमारे पास है! सीधी भाषा में संविधान की बातें करना, संविधान को दिखाने से आगे संविधान को खोलकर उसे जनता के माध्यम से पूर्ण ग्राफिक्स रूप देना है! इससे ए आई का जो खतरा अब दुनियाभर की बनाने वाली कंपनियों को दिखाने लगा है वो भी खत्म हो जायेगा! देश की हर समस्या का हल बहुत आसानी से निकल जायेगा और कानून बनाने में डेढ़ होशियारी व चोर रास्ता बनाने का खेल बनने से पहले ही सामने आ जायेगा!

इसके लिए राष्ट्रपति सीधी अनुमति दे या उच्चतम न्यायालय की फुल संविधान पीठ अनुमति दे! यदि ये दोनों संविधान संरक्षक होने के नाते अपने कृतव्य को नहीं निभाते तो देश का कोई बड़ा स्वतन्त्र समुह / संगठन सामने आये और सभी को जोड़ने की सोच रखें! इसके पश्चात सभी मिलकर कर देशवासियों की मदद से संविधान का पूर्ण ग्राफिक्स रूप बनाकर राष्ट्रपति को दे और वे सुप्रीम कोर्ट की पूर्ण संविधान पीठ से राय मांगकर आधिकारिक रूप से लागू करें!

सबकुछ तैयार हैं बस शुरुआत करना शेष है! अधिकांश मीडिया इसे दिखाना नहीं चाहती क्योंकि उसे भविष्य से लेना देना नहीं है उसे तो बस वर्तमान की तोड़फोड़, लोगों का तड़पना, बर्बाद होना, मरना ही खबर लगता हैं! हम इसके लिए भूख हड़ताल, अनशन व आन्दोलन करेंगे नहीं क्योंकि देश मेरे अकेले का नहीं और सिर्फ मुझे ही अकेला जिन्दा नहीं रहना! अब जो लोग लोकतन्त्र बर्बाद होने के कारण काल के निवाले बनने वाले हैं वो सिर्फ़ मेरे अकेले के रिश्तेदार नहीं है बल्कि हर किसी न किसी देशवासी से जुड़े हैं चाहे वो आम आदमी हो या संवैधानिक पद पर बैठा खास व्यक्ति!! ***( यह लेखक के स्वयं के विचार हैं).***

# तस्वीरों और आवाज़ों के माध्यम से अतीत को जीवित रखना

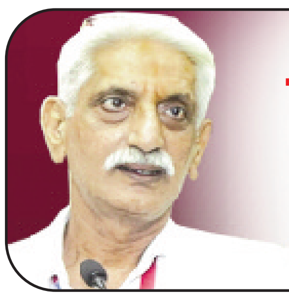

संपादकीय

चिंतन-मनन

डॉ. विजय गर्ग

रिटायर्ड प्रिंसिपल | एमिनेंट साइंटिस्ट

मौखिक इतिहास उन अनुभवों को दर्ज करने के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, जिनका सरकारी अभिलेखों में उल्लेख नहीं मिलता। किसान कृषि पद्धतियों में आए बदलावों का वर्णन कर सकते हैं, बुजुर्ग अपने गाँवों के बदलते स्वरूप की यादें साझा कर सकते हैं और सेवानिवृत्त शिक्षक शिक्षण संस्थानों के विकास के बारे में जानकारी दे सकते हैं। ऐसे व्यक्तिगत अनुभव सामान्य लोगों के जीवन को इतिहास से जोड़ते हैं।

इतिहास केवल पुस्तकों, ऐतिहासिक इमारतों, संग्रहालयों और सरकारी अभिलेखों में ही सुरक्षित नहीं रहता। वह पुरानी तस्वीरों, रिकॉर्ड की गई आवाज़ों, पारिवारिक बातचीत, लोकगीतों, निजी पत्रों और भुला दी गई कहानियों में भी जीवित रहता है। सामान्य दिखाई देने वाली ये वस्तुएँ और रिकॉर्डिंग अपने भीतर व्यक्तियों, समुदायों और सभ्यताओं की असाधारण स्मृतियाँ संजोए रखती हैं। इन्हें सुरक्षित रखना आवश्यक है, क्योंकि इनके खो जाने पर हमारी सामूहिक विरासत का एक अमूल्य हिस्सा हमेशा के लिए नष्ट हो सकता है।

तेज़ी से बदलते तकनीकी युग में तस्वीरों और आवाज़ों का संरक्षण पहले से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है। ये पीढ़ियों को आपस में जोड़ती हैं, भूली-बिसरी घटनाओं को फिर से जीवंत करती हैं और आने वाली पीढ़ियों को यह समझने में सहायता देती हैं कि पुराने समय में लोग कैसे रहते थे, काम करते थे, उत्सव मनाते थे, संघर्ष करते थे और सपने देखते थे।

### तस्वीरें: अतीत की ओर खुलने वाली खिड़कियाँ

एक तस्वीर केवल दृश्य चित्र नहीं होती। यह समय का ऐसा क्षण है, जिसमें किसी विशेष काल की परिस्थितियाँ, भावनाएँ, संबंध और जीवनशैली समाहित होते हैं। परिवार की कोई पुरानी तस्वीर हमें पारंपरिक वेशभूषा, भवन निर्माण की शैलियों, सामाजिक रीति-रिवाजों, व्यवसायों और उन सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में जानकारी दे सकती है, जो आज सामान्य रूप से दिखाई नहीं देतीं।

ऐतिहासिक घटनाओं, स्वतंत्रता सेनानियों, शिक्षण संस्थानों, गाँवों, बाजारों और सार्वजनिक समारोहों की तस्वीरें सामाजिक परिवर्तन के महत्त्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। इनके माध्यम से इतिहासकार जीवनशैली, आधारभूत संरचना, परंपराओं और मानवीय संबंधों में आए बदलावों को समझ सकते हैं।

परिवारों के लिए पुरानी तस्वीरें दादा-दादी, माता-पिता और उन रिश्तेदारों की यादें संजोती हैं, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। ये नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से परिचित कराती हैं और अपनी पहचान के प्रति सम्मान की भावना विकसित करती हैं। कभी-कभी एक धुंधली पड़ चुकी तस्वीर भी लिखित विवरण के कई पन्नों से अधिक प्रभावशाली संदेश दे सकती है।

हालाँकि, तस्वीरें भी समय के साथ नष्ट हो सकती हैं। कागज पुराना होकर कमजोर पड़ जाता है, रंग फीके हो जाते हैं और नमी के कारण फफूँद लग सकती है। अनुचित ढंग से रखी गई तस्वीरें खराब हो सकती हैं। आग, बाढ़ या अनजाने में पुरानी वस्तुओं को फेंक देने से बहुमूल्य यादें हमेशा के लिए खो सकती हैं।

इसलिए पुरानी तस्वीरों को सावधानीपूर्वक सुरक्षित रखना, उन पर आवश्यक जानकारी लिखना और जहाँ संभव हो, उन्हें डिजिटल रूप में संरक्षित करना चाहिए।

### आवाज़ें: इतिहास की जीवंत गूँज

यदि तस्वीरें हमें अतीत दिखाती हैं, तो रिकॉर्ड की गई आवाज़ें हमें उसे सुनने का अवसर देती हैं। बचपन की यादें सुनाते दादा-दादी की आवाज़, ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करते किसी स्वतंत्रता सेनानी के विचार या पारंपरिक गीत गाते लोक कलाकार की स्वर-लहरी में ऐसी भावनात्मक और सांस्कृतिक समृद्धि होती है, जिसे केवल लिखित शब्दों में पूरी तरह व्यक्त नहीं किया जा सकता।

आवाज़ों में उच्चारण, बोलियाँ, लहजे, भावनाएँ और क्षेत्रीय पहचान सुरक्षित रहती हैं। इनके माध्यम से हम समझ सकते हैं कि भाषाएँ समय के साथ कैसे विकसित हुईं और विभिन्न समुदायों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी संवाद कैसे किया।

मौखिक इतिहास उन अनुभवों को दर्ज करने के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, जिनका सरकारी अभिलेखों में उल्लेख नहीं मिलता।

किसान कृषि पद्धतियों में आए बदलावों का वर्णन कर सकते हैं, बुजुर्ग अपने गाँवों के बदलते स्वरूप की यादें साझा कर सकते हैं और सेवानिवृत्त शिक्षक शिक्षण संस्थानों के विकास के बारे में जानकारी दे सकते हैं। ऐसे व्यक्तिगत अनुभव सामान्य लोगों के जीवन को इतिहास से जोड़ते हैं।

पारंपरिक गीत, लोककथाएँ, धार्मिक पाठ और स्थानीय कहानी-कथन भी महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक संसाधन हैं। अनेक मौखिक परंपराएँ सदियों से मानवीय स्मृति के सहारे जीवित रही हैं। लेकिन जब किसी विशेष गीत, बोली या कहानी को जानने वाला अंतिम व्यक्ति दुनिया से विदा हो जाता है, तो उससे जुड़ा ज्ञान भी समाप्त हो सकता है, यदि उसे पहले रिकॉर्ड न किया गया हो।

इसलिए आवाज़ों को सुरक्षित रखना केवल तकनीकी कार्य नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विविधता और मानवीय अनुभवों की रक्षा करने का प्रयास है।

### तकनीक: पीढ़ियों को जोड़ने वाला पुल

डिजिटल तकनीक ने ऐतिहासिक स्मृतियों को सुरक्षित रखने के अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए हैं। पुरानी तस्वीरों को उच्च गुणवत्ता में स्कैन किया जा सकता है और ऑडियो रिकॉर्डिंग को डिजिटल प्रारूप में बदला जा सकता है। वीडियो साक्षात्कार, पारिवारिक वृत्तचित्र और मौखिक इतिहास के डिजिटल संग्रह भविष्य की पीढ़ियों के लिए कहानियों को सुरक्षित रख सकते हैं।

क्लाउड स्टोरेज, बाहरी हार्ड ड्राइव और डिजिटल पुस्तकालय इन सामग्रियों को व्यवस्थित करने तथा आवश्यकता पड़ने पर उपलब्ध कराने में सहायक हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तस्वीरों के सुधार, आवाज़ की पहचान, रिकॉर्डिंग को लिखित रूप में बदलने और अनुवाद करने में सहायता कर सकती है। इससे विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले लोगों और देखने या सुनने में असमर्थ व्यक्तियों के लिए भी ऐतिहासिक सामग्री तक पहुँच आसान हो सकती है।

लेकिन तकनीक कुछ चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। पुराने फाइल प्रारूपों, खराब स्टोरेज उपकरणों, भूले हुए पासवर्ड या बंद हो चुकी सेवाओं के कारण डिजिटल सामग्री तक पहुँच समाप्त हो सकती है। संशोधित तस्वीरें और कृत्रिम रूप से तैयार की गई आवाज़ें ऐतिहासिक प्रामाणिकता को लेकर भ्रम भी पैदा कर सकती हैं।

इसलिए विश्वसनीय बैकअप, स्पष्ट विवरण, तिथियाँ, नाम और संदर्भ संबंधी जानकारी सुरक्षित रखना आवश्यक है। समय-समय पर फाइलों को नए और उपयोगी प्रारूपों में बदलना चाहिए। महत्त्वपूर्ण सामग्री की कई प्रतियाँ अलग-अलग स्थानों पर रखनी चाहिए।

डिजिटल सुधार भी जिम्मेदारी के साथ किया जाना चाहिए। मूल तस्वीरों और रिकॉर्डिंग को सुरक्षित रखना तथा उनमें किए गए बड़े बदलावों का विवरण दर्ज करना आवश्यक है।

### परिवारों, विद्यालयों और समुदायों की भूमिका

ऐतिहासिक विरासत को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी केवल सरकारों और पेशेवर अभिलेख विशेषज्ञों की नहीं है। प्रत्येक परिवार, विद्यालय, गाँव और समुदाय इसमें योगदान दे सकता है।

परिवार पुरानी तस्वीरों, पत्रों, प्रमाणपत्रों, ऑडियो रिकॉर्डिंग और व्यक्तिगत कहानियों को व्यवस्थित डिजिटल फोल्डरों में सुरक्षित रख सकते हैं। विद्यालयों में विरासत को समर्पित विशेष कोने बनाए जा सकते हैं, जहाँ विद्यार्थी अपने संस्थानों का इतिहास दर्ज करें और सेवानिवृत्त शिक्षकों तथा पूर्व विद्यार्थियों के साक्षात्कार लें।

गाँवों के संगठन बुजुर्गों, स्थानीय कारीगरों, लोक गायकों और सामुदायिक नेताओं की यादों को रिकॉर्ड कर सकते हैं। पुस्तकालय और संग्रहालय क्षेत्रीय इतिहास को सुरक्षित रखने के लिए ऐसे डिजिटल संग्रह विकसित कर सकते हैं, जिन तक आम लोगों की पहुँच हो।

विद्यार्थी ऐसे परियोजना कार्यों में भाग ले सकते हैं, जिनमें तकनीक, शोध, भाषा और सामाजिक अध्ययन का समन्वय हो। ऐसी गतिविधियाँ उन्हें सिखाती हैं कि इतिहास केवल तिथियों और नामों का संग्रह नहीं, बल्कि वास्तविक लोगों के जीवन अनुभवों का दस्तावेज़ है।

इन प्रयासों में अनुमति, निजता और सांस्कृतिक संवेदनशीलता का ध्यान रखना आवश्यक है। व्यक्तिगत रिकॉर्डिंग को उचित सहमति के बिना सार्वजनिक नहीं करना चाहिए, विशेषकर तब, जब उनमें संवेदनशील जानकारी हो।

### भविष्य के लिए यादों का संरक्षण

हर पीढ़ी को अतीत की कहानियाँ विरासत में मिलती हैं और उन्हें अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी भी उसी की होती है। दुर्भाग्य से, आज भी अनेक बहुमूल्य तस्वीरें धूल भरे बक्सों में बिना पहचान के पड़ी हैं, जबकि पुरानी रिकॉर्डिंग अप्रचलित टेपों और उपकरणों में धीरे-धीरे नष्ट हो रही हैं।

हमें इन यादों के खोने से पहले कदम उठाने चाहिए। परिवार छोटे संग्रह से शुरुआत कर सकते हैं, पुरानी तस्वीरों में दिखाई देने वाले व्यक्तियों और स्थानों की पहचान कर सकते हैं, बुजुर्ग रिश्तेदारों के साथ बातचीत रिकॉर्ड कर सकते हैं और उनकी सुरक्षित प्रतियाँ बना सकते हैं। समुदायों को नष्ट होने के खतरे में पड़ी ऐतिहासिक सामग्री की पहचान करके आवश्यकता पड़ने पर विशेषज्ञों की सहायता लेनी चाहिए।

तस्वीरों और आवाज़ों को सुरक्षित रखना वास्तव में हमारी सामूहिक स्मृति में निवेश करना है। ये हमें हमारी जड़ों से जोड़ती हैं, वर्तमान को समझने में मदद करती हैं और भविष्य की पीढ़ियों को अपनी विरासत के साथ वास्तविक संबंध स्थापित करने का अवसर देती हैं।

जब तस्वीरें धुंधली पड़ जाती हैं और आवाज़ें खामोश हो जाती हैं, तब इतिहास अपना मानवीय स्पर्श खोने लगता है। आज इन दृश्य और ध्वनि संबंधी खजानों को सुरक्षित रखकर हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि अतीत के अनुभव, ज्ञान और भावनाएँ आने वाली पीढ़ियों से भी संवाद करती रहें।

**सेवानिवृत्त प्राचार्य। शैक्षिक स्तंभकार। प्रतिष्ठित शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब**

# रस्मों से परे: विवाह का असली जादू

डॉ. विजय गर्ग

विवाह केवल दो व्यक्तियों को एक साथ जोड़ने वाला समारोह नहीं है, बल्कि यह भावनाओं, परंपराओं, रिश्तों, आशाओं और सपनों का सुंदर संगम है। विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों में विवाह को जीवन के एक नए अध्याय की शुरुआत के रूप में मनाया जाता है। रस्में, सजावट, संगीत और भव्य आयोजन विवाह को यादगार बनाते हैं, लेकिन इसका वास्तविक जादू उन मानवीय संबंधों में छिपा होता है, जो इस अवसर पर और मजबूत होते हैं, तथा उन वादों में होता है, जो दो व्यक्ति एक-दूसरे से करते हैं।

**केवल एक समारोह नहीं**

अनेक समाजों में विवाह पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही परंपराओं और रीति-रिवाजों से गहराई से जुड़ा होता है। अंगूठियों का आदान-प्रदान करने और पवित्र वचन लेने से लेकर लोकगीत गाने तथा पारंपरिक नृत्य करने तक, प्रत्येक रस्म का अपना विशेष महत्व होता है। ये परंपराएँ नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ती हैं और उन मूल्यों की याद दिलाती हैं, जिन्होंने समाज को आकार दिया है।

लेकिन विवाह का महत्व केवल रस्में निभाने तक सीमित नहीं है। कोई समारोह तभी सार्थक बनता है, जब उसमें शामिल लोग उसके पीछे छिपी भावनाओं और जिम्मेदारियों को समझते हैं। विवाह के समय किए गए वादे केवल औपचारिक घोषणाएँ नहीं होते, बल्कि जीवन के हर पड़ाव पर एक-दूसरे का साथ देने, विश्वास बनाए रखने, सम्मान करने और सहयोग देने का संकल्प होते हैं।

विवाह की वास्तविक सुंदरता इस बात में नहीं है कि प्रत्येक रस्म कितनी भव्यता से निभाई गई, बल्कि इस बात में है कि दो व्यक्ति अपने साझा जीवन की शुरुआत कितनी ईमानदारी और समर्पण से करते हैं।

**रिश्तों का उत्सव**

विवाह रिश्तों का उत्सव भी है। इस अवसर पर रिश्तेदार, मित्र, पड़ोसी और दूर-दराज से आए लोग खुशियाँ साझा करने के लिए एकत्रित होते हैं। पुरानी मित्रताएँ फिर से जीवंत होती हैं, पारिवारिक यादें ताजा होती हैं और नए संबंध बनते हैं।

माता-पिता के लिए बच्चे का विवाह गर्व, खुशी और भावनाओं से भरा क्षण होता है। उन्हें एहसास होता है कि उनके बच्चे के जीवन में एक नया चरण शुरू हो रहा है। भाई-बहनों के लिए यह अवसर उत्साह, स्नेह और पुरानी यादों का मिला-जुला अनुभव होता है। मित्र इस आयोजन में हँसी, उमंग और अविस्मरणीय यादों के रंग भरते हैं।

ये भावनाएँ विवाह को केवल दो व्यक्तियों का समारोह नहीं रहने देतीं, बल्कि इसे एक सामूहिक अनुभव बना देती हैं। तस्वीरें, बातचीत, गीत और साथ बैठकर किया गया भोजन अक्सर सजावट हट जाने के बाद भी लोगों की स्मृतियों में बसे रहते हैं।

**परंपराओं का जादू**

प्रत्येक संस्कृति विवाह समारोहों में अपने विशिष्ट रंग भरती है। भारतीय विवाह अपनी विविध रस्मों, रंग-बिरंगे परिधानों, संगीत, भोजन और पारिवारिक सहभागिता के लिए प्रसिद्ध हैं। पंजाब में लोकगीत, गिद्धा, भांगड़ा, खुशियों से भरी महफिलें और विवाह के विभिन्न चरणों से जुड़ी रस्में उत्सवपूर्ण वातावरण बनाती हैं।

ये परंपराएँ केवल रंगीन प्रस्तुतियाँ नहीं हैं, बल्कि इनमें इतिहास, जीवन-मूल्य और सांस्कृतिक पहचान समाहित होती है। लोकगीत माता-पिता और भाई-बहनों की भावनाओं को व्यक्त करते हैं, जबकि पारंपरिक नृत्य विभिन्न पीढ़ियों को खुशी के साझा मंच पर एकत्रित करते हैं।

परंपराओं को केवल इसलिए नहीं निभाना चाहिए कि वे लंबे समय से चली आ रही हैं। उनके वास्तविक उद्देश्य को समझना अधिक आवश्यक है। उनका उद्देश्य रिश्तों को मजबूत करना, खुशियाँ साझा करना और नई शुरुआत का स्वागत करना है। जब रस्में प्रेम, कृतज्ञता और आपसी मेल-जोल का माध्यम बनती हैं, तो उनका महत्व और बढ़ जाता है।

**जब भव्यता अर्थ पर हावी हो जाती है**

आधुनिक समय में विवाह अक्सर अत्यधिक भव्य और महँगे आयोजन बन गए हैं। महँगे विवाह-स्थल, डिजाइनर कपड़े, शानदार भोजन, आकर्षक सजावट और पेशेवर फोटोग्राफी कई बार तैयारियों

का मुख्य हिस्सा बन जाते हैं। सोशल मीडिया ने भी तुलना करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है, जिसके कारण परिवार दूसरों को प्रभावित करने वाले समारोह आयोजित करने का दबाव महसूस करते हैं।

अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार विवाह को सुंदर ढंग से मनाने में कोई बुराई नहीं है। समस्या तब पैदा होती है, जब दिखावा उन लोगों और वादों से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, जो विवाह के केंद्र में होते हैं।

विवाह आर्थिक बोझ या दो परिवारों के बीच प्रतिस्पर्धा का कारण नहीं बनना चाहिए। अत्यधिक खर्च, अनावश्यक प्रदर्शन और अवास्तविक अपेक्षाएँ खुशी के अवसर को तनावपूर्ण बना सकती हैं।

सबसे यादगार विवाह जरूरी नहीं कि सबसे महँगे ही हों। अक्सर प्रेम, हँसी और आत्मीयता से भरा एक साधारण समारोह उस भव्य आयोजन से अधिक प्रभाव छोड़ता है, जिसमें लोग व्यवस्थाओं में इतने व्यस्त रहते हैं कि खुशी के क्षणों का आनंद ही नहीं ले पाते।

**साझेदारी की नई शुरुआत**

विवाह के उत्साह के बीच यह याद रखना जरूरी है कि वास्तविक वैवाहिक जीवन समारोह समाप्त होने के बाद शुरू होता है। विवाह का दिन फूलों, संगीत और मुस्कुराते चेहरों से भरा हो सकता है, लेकिन वैवाहिक जीवन में रोजमर्रा की जिम्मेदारियाँ, आपसी तालमेल, मतभेद और साझा निर्णय भी शामिल होते हैं।

एक सफल साझेदारी के लिए धैर्य, ईमानदार संवाद, पारस्परिक सम्मान और भावनात्मक समझ आवश्यक हैं। दोनों जीवनसाथियों को अपने विचार व्यक्त करने, अपने सपनों को पूरा करने और जीवन से जुड़े निर्णयों में भाग लेने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

विवाह का आधार वर्चस्व के बजाय समानता और अनुचित अपेक्षाओं के बजाय सहयोग होना चाहिए। एक-दूसरे के व्यक्तिगत विकास में सहायता करना और घरेलू जिम्मेदारियाँ साझा करना ऐसे रिश्ते की नींव रखता है, जो विवाह की शुरुआती चमक समाप्त होने के बाद भी मजबूत बना रहता है।

वैवाहिक जीवन की वास्तविक परीक्षा इस बात से नहीं होती कि विवाह कितना भव्य था, बल्कि इस बात से होती है कि जीवनसाथी सामान्य दिनों में एक-दूसरे के साथ कितना सम्मान और प्रेम से पेश आते हैं।

**विवाह को अधिक सार्थक बनाना**

परिवार दिखावे के बजाय अनुभवों और भावनाओं पर ध्यान देकर विवाह को अधिक यादगार बना सकते हैं। माता-पिता का दिल से दिया गया संदेश, परिवार का कोई गीत, नवविवाहित जोड़े के लिए हाथ से लिखा संदेश या दूर से आए किसी प्रियजन की उपस्थिति जीवनभर की यादें बन सकती हैं।

विवाह समारोह सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी प्रदर्शित कर सकते हैं। परिवार भोजन की बर्बादी कम कर सकते हैं, अनावश्यक खर्च से बच सकते हैं, पर्यावरण के अनुकूल सजावट अपना सकते हैं और स्थानीय कारीगरों को प्रोत्साहित कर सकते हैं। अपनी इच्छा और क्षमता के अनुसार जरूरतमंदों के लिए भोजन की व्यवस्था या किसी सामाजिक कार्य में योगदान भी दिया जा सकता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि विवाह की तैयारियों में नवविवाहित जोड़े की इच्छा, सुविधा और पसंद को केंद्र में रखा जाए। उनके विचारों, मूल्यों और अपेक्षाओं का सम्मान होना चाहिए। विवाह उनकी साझेदारी का उत्सव है, केवल सामाजिक दायित्वों को पूरा करने का अवसर नहीं।

**स्थायी यादों का निर्माण**

विवाह का जादू संगीत बंद होने या मेहमानों के घर लौट जाने से समाप्त नहीं होता। यह उन यादों और रिश्तों में जीवित रहता है, जिन्हें लोग अपने साथ लेकर जाते हैं। कोई तस्वीर मुस्कान को संजो सकती है, कोई गीत भावुक क्षण की याद ताजा कर सकता है और किसी का छोटा-सा सद्भावपूर्ण कार्य वर्षों तक याद रह सकता है।

वास्तव में, विवाह आशा और विश्वास का उत्सव है। यह साथ मिलकर जीवन बिताने, कठिनाइयों का सामना करने और साझा अनुभवों में खुशी खोजने की संभावना को दर्शाता है। इसकी सुंदरता परंपरा और व्यक्तिगत भावनाओं, पारिवारिक प्रेम और व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा उत्सव और प्रतिबद्धता के मेल में निहित है।

**निष्कर्ष**

रस्मों, सजावट और भव्य आयोजनों से परे विवाह का वास्तविक जादू साथ निभाने के वादे, पारिवारिक रिश्तों की आत्मीयता और साझा जीवन की शुरुआत में छिपा होता है।

विवाह केवल इसलिए यादगार नहीं बनता कि उसे बड़े स्तर पर मनाया गया। वह तब यादगार बनता है, जब लोग स्वयं को महत्वपूर्ण महसूस करते हैं, रिश्ते मजबूत होते हैं और नया जोड़ा आपसी सम्मान तथा समझ के साथ अपने वैवाहिक जीवन की शुरुआत करता है।

सबसे अच्छा विवाह वह नहीं होता, जो सबसे अधिक लोगों को प्रभावित करे, बल्कि वह होता है, जो उसमें शामिल लोगों के दिलों में सबसे गहरी खुशी छोड़ जाए। आखिरकार, विवाह का समारोह एक दिन का हो सकता है, लेकिन उससे जुड़ा प्रेम, विश्वास और यादें पूरे जीवन को सुंदर बना सकती हैं।

**सेवानिवृत्त प्राचार्य। शैक्षिक स्तंभकार। प्रतिष्ठित शिक्षाविद् गली कौर चंद, एम.एच.आर.,**

# किताबें पढ़ें, इनाम पाएं: पंजाब का अनोखा गाँव रण सिंह कलां, जो ज्ञान और पर्यावरण संरक्षण की नई मिसाल बना

डॉ. विजय गर्ग

आज के डिजिटल युग में, जब बच्चों और युवाओं का काफी समय मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और वीडियो गेम में बीतता है, उस समय पंजाब के मोगा जिले का गाँव रण सिंह कलां एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस गाँव ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि यदि लोगों को सही दिशा, प्रोत्साहन और अवसर दिए जाएँ, तो पढ़ने की आदत को फिर से लोकप्रिय बनाया जा सकता है। यहाँ लोगों को किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ उनकी मेहनत और सीखने की लगन को पुरस्कारों के माध्यम से भी प्रोत्साहित किया जाता है।

यह पहल हमें एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है: यदि किताबें पढ़ने की आदत को सामाजिक सम्मान और उचित प्रोत्साहन मिले, तो क्या हमारे गाँवों और शहरों में ज्ञान की एक नई लहर पैदा नहीं हो सकती?

### किताबों से दोस्ती की नई शुरुआत

किताबें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्रों में से एक हैं। वे हमें नए विचारों से परिचित कराती हैं, हमारी सोच को व्यापक बनाती हैं और दुनिया को समझने की क्षमता प्रदान करती हैं। एक अच्छी किताब कभी-कभी ऐसे सबक सिखा देती है, जिन्हें सीखने के लिए मनुष्य को वर्षों के अनुभव की आवश्यकता होती है।

लेकिन आज पढ़ने की आदत कई चुनौतियों का सामना कर रही है। बहुत से बच्चे लंबे समय तक स्क्रीन के सामने बिताते हैं। छोटी-छोटी वीडियो और लगातार आने वाली सूचनाएँ उनका ध्यान बार-बार भटकाती हैं। इसके कारण किसी विषय को धैर्यपूर्वक पढ़ना, समझना और उस पर गहराई से विचार करना कठिन हो सकता है।

ऐसे वातावरण में रण सिंह कलां की पुस्तकालय-केंद्रित पहल एक महत्त्वपूर्ण संदेश देती है। गाँव के पुस्तकालय में लगभग एक हजार किताबें होने की जानकारी यह संकेत देती है कि ज्ञान के स्रोतों को लोगों तक पहुँचाना सामाजिक परिवर्तन की पहली सीढ़ी है।

### पढ़ने के साथ सीखने की परख

इस पहल की एक विशेष बात यह है कि पढ़ने को केवल किताबों की संख्या तक सीमित नहीं रखा जाता। वर्ष के अंत में लिखित और मौखिक परीक्षाओं के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि पाठकों ने पढ़ी गई किताबों से क्या सीखा है। अच्छा प्रदर्शन करने वालों को सम्मानित किया जाता है और पढ़ने वालों को आर्थिक पुरस्कार देकर भी प्रोत्साहित किया जाता है।

यह तरीका एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत को उजागर करता है: पढ़ने का वास्तविक उद्देश्य केवल पन्ने पलटना नहीं, बल्कि ज्ञान प्राप्त करना और उसे जीवन में उपयोग करना है।

जब पाठक को पता होता है कि उसे पढ़ी गई सामग्री के बारे में अपने विचार व्यक्त करने होंगे, तो वह अधिक ध्यान से पढ़ने का प्रयास कर सकता है। लिखित परीक्षा उसकी समझ और स्मरण शक्ति को परखती है, जबकि मौखिक परीक्षा विचार व्यक्त करने तथा आत्मविश्वास के साथ बोलने की क्षमता विकसित करने में मदद कर सकती है।

इस प्रकार पढ़ने की प्रक्रिया केवल व्यक्तिगत मनोरंजन नहीं रह जाती, बल्कि सीखने, विचार करने और स्वयं को बेहतर बनाने का साधन बन जाती है।

### क्या किताबें पढ़ने के लिए पैसे देना उचित है?

कुछ लोग यह प्रश्न उठा सकते हैं कि क्या पैसे देकर पढ़ने की आदत विकसित करना सही है। क्या बच्चों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुरस्कार की आवश्यकता होनी चाहिए?

यह प्रश्न उचित है। पढ़ने का सबसे अच्छा आधार आंतरिक प्रेरणा है—जब कोई व्यक्ति अपनी जिज्ञासा, रुचि और सीखने की इच्छा के कारण पढ़ता है। लेकिन हर अच्छी आदत शुरुआत से ही अपने आप विकसित नहीं होती। कई बार छोटे-छोटे प्रोत्साहन व्यक्ति को पहला कदम उठाने के लिए प्रेरित करते हैं। किसी बच्चे को पहली बार किताब पढ़ने के लिए पुरस्कार मिल सकता है, लेकिन धीरे-धीरे उसे कहानी के रोमांच, नए ज्ञान और सीखने की खुशी से जोड़ना आवश्यक है। इसी प्रकार वयस्कों के लिए भी पुरस्कार शुरुआती प्रेरणा बन सकता है, लेकिन दीर्घकालीन सफलता के लिए पढ़ने को जीवन का हिस्सा बनाना जरूरी है।

इसलिए आर्थिक पुरस्कारों को पढ़ने का एकमात्र उद्देश्य बनाने के बजाय, उन्हें अच्छी आदत विकसित करने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

### पर्यावरण संरक्षण में भी अनोखी पहल

रण सिंह कलां की विशेषता केवल किताबें पढ़ने को प्रोत्साहित करने तक सीमित नहीं है। गाँव में पर्यावरण की रक्षा के लिए किए गए प्रयास भी समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। प्लास्टिक का कचरा इकट्ठा करके देने के बदले चीनी देने की पहल इस बात का उदाहरण है कि पर्यावरण संरक्षण को लोगों के दैनिक जीवन से कैसे जोड़ा जा सकता है। आमतौर पर लोग प्लास्टिक के कचरे को बेकार समझकर इधर-उधर फेंक देते हैं। लेकिन जब उसे इकट्ठा करने के लिए कोई सरल और उपयोगी प्रोत्साहन दिया जाता है, तो लोगों की भागीदारी बढ़ सकती है। इसी तरह पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने वालों को आर्थिक प्रोत्साहन देने की योजना पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी मजबूत करने का एक तरीका है। केवल पेड़ लगाना ही पर्याप्त नहीं है; उन्हें पानी देना, पशुओं से बचाना और बड़ा होने तक उनकी देखभाल करना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। इन प्रयासों का वास्तविक महत्त्व इस बात में है कि ये लोगों को समस्याओं के बारे में केवल भाषण सुनने के बजाय स्वयं कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करते हैं।

# चक्रवात 'अर्नब' के संभावित असर से पहले सतर्क हुआ राउरकेला महानगर निगम

## कमिश्नर दीना दस्तगीर ने टिम्बर कॉलोनी, रेलवे कॉलोनी और मालगोदाम का किया निरीक्षण; रेलवे फाटक के समीप बस्ती पहुंचकर जानी जलनिकासी व्यवस्था की स्थिति

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव
परिवहन विशेष समाचार पत्र
राउरकेला

चक्रवात 'अर्नब' के प्रभाव से संभावित बारिश और जलजमाव की आशंका को देखते हुए राउरकेला महानगर निगम (आरएमसी) ने एहतियाती तैयारियों को गति दे दी है। बारिश के दौरान निचले इलाकों में जलभराव से आम नागरिकों को होने वाली परेशानियों को कम करने के उद्देश्य से निगम की कमिश्नर दीना दस्तगीर (भा प्र से) ने गुरुवार को शहर के विभिन्न संवेदनशील क्षेत्रों का दौरा कर जमीनी स्थिति का जायजा लिया। इस दौरान टिम्बर कॉलोनी, रेलवे कॉलोनी और मालगोदाम क्षेत्र में जलनिकासी की व्यवस्था तथा संभावित जलजमाव की स्थिति पर विशेष ध्यान दिया गया।

निरीक्षण के क्रम में कमिश्नर मालगोदाम रेलवे फाटक के समीप स्थित बस्ती में भी पहुंचीं। यहां उन्होंने क्षेत्र की परिस्थितियों और बारिश के दौरान उत्पन्न हो सकने वाली समस्याओं का आकलन किया। रेलवे फाटक के आसपास की बस्तियों में जलनिकासी की स्थिति का निरीक्षण करना इस दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा कि समय रहते संभावित बाधाओं की पहचान कर आवश्यक कदम उठाए जा सकें।

कमिश्नर ने मौके पर उपस्थित महानगर निगम के अधिकारियों को सतर्क रहने तथा संवेदनशील इलाकों में विशेष निगरानी बनाए रखने का निर्देश दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि बारिश के कारण कहीं जलजमाव की स्थिति उत्पन्न होने पर जमा पानी की शीघ्र निकासी के लिए तत्काल आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। अधिकारियों को संभावित समस्याओं पर समय रहते प्रतिक्रिया देने और नागरिकों को अनावश्यक परेशानी से बचाने के लिए तैयार रहने को कहा गया।

आपदा से पहले तैयारी पर जोर चक्रवात के संभावित प्रभाव के मद्देनजर निगम का यह निरीक्षण शहरी आपदा प्रबंधन और नागरिक सुविधाओं की निरंतरता के लिहाज से अहम है। भारी बारिश के दौरान जलनिकासी व्यवस्था की प्रभावशीलता ही कई बस्तियों में जनजीवन को सामान्य बनाए रखने में निर्णायक साबित होती है।

आरएमसी की इस पहल का उद्देश्य केवल संभावित जलजमाव पर प्रतिक्रिया देना नहीं, बल्कि संवेदनशील क्षेत्रों की स्थिति को पहले से समझकर समयबद्ध हस्तक्षेप सुनिश्चित करना भी है। अब इन निर्देशों का प्रभावी क्रियान्वयन और बारिश के दौरान अधिकारियों की सक्रिय निगरानी महत्वपूर्ण होगी, ताकि चक्रवात के संभावित असर के बीच शहरवासियों को राहत मिल सके।

# विकास भवन में गंदगी और कबाड़ देख जताई भारी नाराजगी, लापरवाह कर्मचारियों को अल्टीमेटम

परिवहन विशेष न्यूज

**गोरखपुर।** मुख्य विकास अधिकारी (सीडीओ) शाश्वत त्रिपुरारी ने गुरुवार को विकास भवन स्थित विभिन्न कार्यालयों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान कार्यालयों में फैली गंदगी, फाइलों के अव्यवस्थित रखरखाव और भारी मात्रा में कबाड़ देखकर उन्होंने कड़ी नाराजगी व्यक्त की। सीडीओ ने संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों को कार्यप्रणाली में सुधार लाने की कड़ी चेतावनी दी है। निरीक्षण के दौरान अधिशासी अभियंता, ग्रामीण अभियंत्रण विभाग और प्रखंड-गोरखपुर सहित कई अन्य कार्यालयों में कर्मचारी अपनी सीटों से नदारद पाए गए। सीडीओ ने इस अनुशासनहीनता को गंभीरता से लेते हुए अनुपस्थित कर्मचारियों को तत्काल 'कारण बताओ नोटिस' जारी करने का निर्देश दिया है। सीडीओ ने स्पष्ट किया है कि नोटिस का जवाब दो दिन के भीतर देना होगा। यदि निर्धारित समय में संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं मिलता है, तो संबंधित कर्मचारियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई के लिए शासन को रिपोर्ट भेजी जाएगी। उन्होंने कहा कि सरकारी कामकाज में लापरवाही और अनुशासनहीनता को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। विकास भवन की अव्यवस्था पर नाराजगी जताते हुए सीडीओ ने जिला विकास अधिकारी (DDO) और नाजिर को टीम लगाकर पूरे भवन में विशेष सफाई अभियान चलाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि गलियारों, कमरों और परिसर में नियमित सफाई सुनिश्चित की जाए और अनुपयोगी सामान व कबाड़ को नियमानुसार तत्काल हटाया जाए। निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य कार्यालयों की कार्यप्रणाली को व्यवस्थित करना था। सीडीओ ने निर्देश दिया कि सभी पत्रावलियों और अभिलेखों का रखरखाव बेहतर ढंग से हो ताकि कार्यालय में स्वच्छ और सकारात्मक कार्य वातावरण बना रहे। उन्होंने अधिकारियों को नियमित रूप से सफाई व्यवस्था की निगरानी करने की जिम्मेदारी सौंपी है।

# राज्य परिवहन की सुरक्षा निशिचत करने हेतु दिल्ली चलो - भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ की आक्रोश रैली का बिगुल

## राष्ट्रहित, उद्योगहित, श्रमिकहित – तीन नारों के साथ 18 नवंबर को जंतर-मंतर पर गरजेंगे रोडवेज कर्मी, BMS महामंत्री सुरेन्द्र पाण्डे होंगे मुख्य वक्ता

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष ब्यूरो

**तथ्य और कार्यक्रम विवरण:**

आयोजकः भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ - भारतीय मजदूर संघ (BMS) की अखिल भारतीय औद्योगिक इकाई

**कार्यक्रम:** आक्रोश रैली - विशाल रैली-धरना-प्रदर्शन

**तिथि व समय:** बुधवार, 18 नवंबर 2026, प्रातः 11.00 बजे

**स्थान:** जंतर-मंतर, संसद मार्ग, नई दिल्ली

**मुख्य वक्ता:**

1. माननीय श्री सुरेन्द्र कुमार पाण्डे - अखिल भारतीय महामंत्री, भारतीय मजदूर संघ
2. माननीय श्री रविन्द्र हिमते - सेक्टर इंचार्ज (निजी क्षेत्र), भारतीय मजदूर संघ

**निवेदक:** कनक सिंह गोहिल (अध्यक्ष), वी.आर. वारखानी (प्रभारी, परिवहन उद्योग), राजु भालेराव (महामंत्री) एवं समस्त भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ के पदाधिकारी एवं कार्यसमिति सदस्य।

**मुख्य बिंदु - 10 प्रमुख मांगें - जो आपके पर्चे में हैं:**

1. कॉरपोरेशन एक्ट 1950 के तहत 30:70 फॉर्मूला लागू हो: जिस समय राज्य परिवहन निगम बने, 30% केंद्र और 70% राज्य सरकार ने लागत वहन की थी। उसी अनुपात में नवीनीकरण हेतु 30% राशि केंद्र सरकार प्रति वर्ष सभी राज्य परिवहन निगमों को बजट में दे।

2. अनुबंधित भर्ती पर रोक, समान काम समान वेतनः स्थायी प्रकृति के कार्य में अनुबंधित कर्मियों की भर्ती अवैध है। जो भर्ती हो चुके हैं उन्हें तुरंत स्थायी किया जाए, भविष्य में स्थायी भर्ती ही हो। तब तक स्थायी कर्मचारियों के समान सुविधाएं और समान वेतन दिया जाए।

3. इलेक्ट्रिक बसों का बेड़ा निजी ऑपरेटरों को नहीं, STU को मिलेः हर प्रदेश में नई इलेक्ट्रिक बसें आ रही हैं, सरकार निजी ऑपरेटरों को दे रही है जबकि राज्य परिवहन निगम उन्हें चलाने में सक्षम हैं। इससे घातक दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। बसें खरीदकर संचालन सीधे परिवहन निगम को दिया जाए।

4. वेतन-पेंशन समय परः माह के प्रथम कार्य दिवस पर वेतन व पेंशन देना सुनिश्चित हो।

5. पुरानी पेंशन बहाल होः सभी परिवहन कर्मचारियों पर पुरानी पेंशन लागू की जाए।

6. ESI सीमा बढ़ेः E.S.I.C. की सीमा 21,000 रुपये से बढ़ाकर 42,000 रुपये की जाए।

7. टोल टैक्स मुक्तिः सभी राज्य परिवहन निगमों के वाहनों को राष्ट्रीय राजमार्ग पर टोल से मुक्त करने के आदेश जारी हों।

8. ग्रेच्युटी 40 लाखः ग्रेच्युटी की सीमा 40 लाख रुपये की जाए और समय पर भुगतान हो।

9. बस अड्डों पर डिस्पेंसरीः हर बस अड्डे पर परिवहन कर्मियों के लिए डिस्पेंसरी हो ताकि अचानक तबीयत खराब होने पर प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध हो।

10. हर प्रदेश में बड़ा अस्पतालः राज्य परिवहन कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए हर प्रदेश में बड़ा अस्पताल बनाया जाए और उसमें फ्री इलाज की सुविधा हो।

**संपादकीय टिप्पणी:** यह रैली केवल वेतन-भत्तों की मांग नहीं, बल्कि सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को बचाने का आंदोलन है। जब देश में 5 ट्रिलियन इकोनॉमी और ग्रीन मोबिलिटी की बात हो रही है, तब इलेक्ट्रिक बसों को निजी हाथों में देना और STU को कमजोर करना राष्ट्रहित के विपरीत है। ₹राष्ट्रहित, उद्योगहित, श्रमिकहित₹ - BMS का यह मूल मंत्र इसी आक्रोश रैली में साकार होगा।

परिवहन विशेष - Parivahan Vishesh

भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ का मासिक समाचार बुलेटिन | BMS | अंक - अक्टूबर 2026 BMS | अंक - अक्टूबर 2026

"राष्ट्रहित" दिल्ली चलो | "उद्योगहित" दिल्ली चलो | "श्रमिकहित" दिल्ली चलो

भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ (BMS की अखिल भारतीय औद्योगिक ईकाई) - राज्य परिवहन की सुरक्षा हेतु आक्रोश रैली

आक्रोश रैली

बुधवार, 18 नवंबर, 2026 | प्रातः 11.00 बजे | जंतर-मंतर, संसद मार्ग, नई दिल्ली

मुख्य वक्ता
- माननीय श्री सुरेन्द्र कुमार पाण्डे — अखिल भारतीय महामंत्री, भारतीय मजदूर संघ
- माननीय श्री रविन्द्र हिमते — सेक्टर इंचार्ज (निजी क्षेत्र), भारतीय मजदूर संघ

10 प्रमुख मांगें

1. कॉरपोरेशन एक्ट 1950 के अधीन सभी राज्यों में परिवहन निगम की स्थापना हेतु कुल लागत का 30% राशि केन्द्र सरकार एवं 70% राशि राज्य सरकार द्वारा वहन की जाए। सभी राज्यों में राज्य परिवहन निगमों के संचालन हेतु 30% अनुदान राशि का भुगतान केन्द्र सरकार द्वारा सभी राज्य परिवहन निगम को प्रति वर्ष दिये हेतु बजट में प्रावधान सुनिश्चित किया जाये।
2. सभी राज्यों में परिवहन निगम में अवैध रूप से अनुबंधित कर्मचारियों की भर्ती न हो। जहां-जहां पर स्थाई प्रकृति का कार्य होता है वहां पर अनुबंधित कर्मचारियों की भर्ती न की जाये। सरकार अनुबंधित कर्मचारियों की भर्ती कर रही है संघ की मांग है कि जो कर्मचारी भर्ती किए गए हैं उनको तुरन्त प्रभाव से स्थाई किया जाए और भविष्य में स्थाई भर्ती की ही जाए। जब तक स्थाई करने की प्रक्रिया पूरी नहीं होती अस्थाई कर्मचारियों को स्थाई कर्मचारियों के समान सुविधाएं व समान काम का समान वेतन दिया जाए।
3. हर प्रदेश में जो नई बसों (इलेक्ट्रिक बसों) का बेड़ा आ रहा है। सरकार उन बसों का संचालन प्राइवेट ऑपरेटरों को न देकर, राज्य परिवहन निगमों को ही सौंपे ताकि राज्य परिवहन निगम इन बसों को चलाने में सक्षम हों।
4. परिवहन निगम कर्मचारियों को माह के प्रथम कार्य दिवस पर वेतन व पेंशन देना सुनिश्चित करें।
5. सभी परिवहन कर्मचारियों को पुरानी पेंशन लागू की जाए।
6. ई.एस.आई. की सीमा 21,000 रुपये से बढ़ाकर 42,000 रुपये की जाए।
7. सभी राज्य परिवहन निगमों के वाहनों को राष्ट्रीय राजमार्ग पर टोल टैक्स से मुक्त करने के आदेश जारी किया जाये।
8. ग्रेच्युटी की सीमा 40 लाख रुपये की जाए और समय पर भुगतान किया जाये।
9. सभी बस अड्डों पर परिवहन कर्मचारियों के लिए एक डिस्पेन्सरी की व्यवस्था की जाए जिससे अचानक तबियत खराब होने पर परिवहन कर्मचारियों को प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध हो सके।
10. प्रदेश में राज्य परिवहन निगमों के कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए हर प्रदेश में बड़ा अस्पताल बनाया जाए और उसमें फ्री इलाज की सुविधा दी जाए।

उपरोक्त विशाल रैली-धरना-प्रदर्शन में आप सादर आमंत्रित हैं।

कनक सिंह गोहिल, अध्यक्ष, एवं समस्त भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ के पदाधिकारी एवं कार्यसमिति सदस्य | वी.आर. वारखानी, प्रभारी, परिवहन उद्योग | राजु भालेराव, महामंत्री

परिवहन विशेष - Parivahan Vishesh | प्रधान संपादक संजय कुमार बाठला | Editor in Chief Sanjay Kumar Bathla | सह संपादक पिंकी कुंदु | Co Editor Pinki Kundu | अक्टूबर 2026 | October 2026

# बनारस स्टेशन पर 30 और 31 अक्टूबर को बदले रहेंगे कई ट्रेनों के प्लेटफॉर्म, यात्रा से पहले जरूर करें जांच

## शिवगंगा एक्सप्रेस समेत कई प्रमुख ट्रेनों के प्लेटफॉर्म में अस्थायी बदलाव, यात्रा से पहले एनटीईएस पर करें पुष्टि

(संतोष कुमार सिंह)

**वाराणसी :-** पूर्वोत्तर रेलवे प्रशासन द्वारा परिचालनिक सुगमता एवं प्रशासनिक कार्यों के मद्देनजर बनारस रेलवे स्टेशन पर 30 एवं 31अक्टूबर 2026 को आगमन और प्रस्थान करने वाली कई ट्रेनों के प्लेटफॉर्म में अस्थायी परिवर्तन किया गया है। रेल प्रशासन ने यात्रियों से अपील की है कि वे अपनी यात्रा शुरू करने से पहले संबंधित ट्रेन के प्लेटफॉर्म की जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें ताकि किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। रेल प्रशासन द्वारा जारी सूचना के अनुसार 30 अक्टूबर (शुक्रवार) को गाड़ी संख्या 12559 शिवगंगा एक्सप्रेस का प्लेटफॉर्म संख्या आठ से बदलकर सात, गाड़ी संख्या 12581 बनारस-नई दिल्ली सुपरफास्ट एक्सप्रेस का प्लेटफॉर्म आठ से बदलकर छह, गाड़ी संख्या 22586 गांधीनगर कैपिटल- बनारस सुपरफास्ट एक्सप्रेस का प्लेटफॉर्म आठ से बदलकर छह, गाड़ी संख्या 15103 गोरखपुर-बनारस इंटरसिटी एक्सप्रेस का प्लेटफॉर्म छह से बदलकर एक, गाड़ी संख्या 22535 रामेश्वरम-बनारस सुपरफास्ट एक्सप्रेस का प्लेटफॉर्म आठ से बदलकर तीन तथा गाड़ी संख्या 26506 बनारस-खजुराहो वंदे भारत एक्सप्रेस का प्लेटफॉर्म आठ से बदलकर तीन निर्धारित किया गया है।

इसी क्रम में 31 अक्टूबर शनिवार को गाड़ी संख्या 12560 शिवगंगा एक्सप्रेस का प्लेटफॉर्म संख्या आठ से बदलकर पांच, गाड़ी संख्या 12582 नई दिल्ली- बनारस सुपरफास्ट एक्सप्रेस का प्लेटफॉर्म आठ से बदलकर पांच, गाड़ी संख्या 20176 आगरा कैंट-बनारस वंदे भारत एक्सप्रेस का प्लेटफॉर्म आठ से बदलकर एक तथा गाड़ी संख्या 20175 बनारस-आगरा कैंट वंदे भारत एक्सप्रेस का प्लेटफॉर्म आठ से बदलकर एक किया गया है।

रेल प्रशासन ने यात्रियों से अनुरोध किया है कि वे परिवर्तित प्लेटफॉर्म की जानकारी नेशनल ट्रेन इन्क्वायरी सिस्टम (एनटीईएस), स्टेशन पर लगे सूचना पट्टों तथा उद्घोषणा के माध्यम से प्राप्त करें। ट्रेन के आगमन एवं प्रस्थान से पहले प्लेटफॉर्म की पुष्टि अवश्य कर लें जिससे यात्रा के दौरान किसी प्रकार की परेशानी न हो।।

## चेतगंज की नक्कटैया में नगर निगम मुस्तैद, नगर आयुक्त ने किया रूट का निरीक्षण

(संतोष कुमार सिंह)

**वाराणसी:-** विश्वप्रसिद्ध चेतगंज की नक्कटैया के दौरान श्रद्धालुओं की सुविधा, सुचारू आवागमन और सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए नगर निगम पूरी तरह सतर्क और मुस्तैद है। इस क्रम में गुरुवार को नगर आयुक्त हिमांशु नागपाल ने चेतगंज नक्कटैया के पूरे मेला रूट का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने आयोजन समिति के पदाधिकारियों से वार्ता कर समस्याओं के तत्काल निस्तारण के निर्देश दिए। नगर आयुक्त ने पूरे क्षेत्र में नागरिक सुविधाओं को सुदृढ़ करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने निर्देश दिए कि नक्कटैया क्षेत्र में श्रद्धालुओं के आवागमन को सुचारू बनाने के लिए सड़कों और गड्ढों को तत्काल ठीक कराया जाए। मेले की भव्यता और जनसुविधा को देखते हुए पूरे क्षेत्र में मार्ग प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित करने के साथ-साथ रात के समय विशेष सफाई व्यवस्था बनाए रखने के लिए सफाईकर्मियों की विशेष ड्यूटी लगाई गई है इसके अलावा, श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए क्षेत्र में शुद्ध पेयजल के टैंकर और मोबाइल टॉयलेट तैनात करने के निर्देश दिए गए हैं।

# आज 30 अक्टूबर को सभी स्कूलों में छुट्टी, बीएसए ने जारी किया आदेश

परिवहन विशेष न्यूज

**गोरखपुर** ।जनपद में प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा (PET)-2026 के सफल और सुचारु संचालन के लिए प्रशासन ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। जिलाधिकारी के निर्देश पर आज 30 अक्टूबर शुक्रवार को जिले के सभी शैक्षणिक संस्थानों में एक दिवसीय शैक्षणिक अवकाश घोषित किया गया है। इस बार गोरखपुर जनपद में कुल 52 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जहाँ 23 हजार से अधिक अभ्यर्थी लिखित परीक्षा में शामिल होंगे। इतनी बड़ी संख्या में परीक्षार्थियों की मौजूदगी और सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी धीरेन्द्र त्रिपाठी ने अवकाश का आधिकारिक आदेश जारी किया है, ताकि परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की बाधा न आए। यह आदेश जनपद के सभी परिषदीय प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, कंपोजिट, सहायता प्राप्त और निजी मान्यता प्राप्त विद्यालयों पर अनिवार्य रूप से लागू होगा। इसके साथ ही सीबीएसई और आईसीएसई बोर्ड से संबद्ध स्कूलों के प्रधानाध्यापकों और प्रबंधकों को भी इस आदेश का कड़ाई से पालन करने के निर्देश दिए गए हैं। परीक्षा के दौरान व्यवस्थाएं सुचारु बनाए रखने के लिए शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों सहित जिलाधिकारी और मुख्य विकास अधिकारी को भी सूचित कर दिया गया है। सभी खंड शिक्षा अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में इस आदेश का अनुपालन सुनिश्चित कराने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। प्रशासन का उद्देश्य है कि परीक्षा केंद्रों पर आवश्यक समन्वय बना रहे और अभ्यर्थियों को किसी भी असुविधा का सामना न करना पड़े।

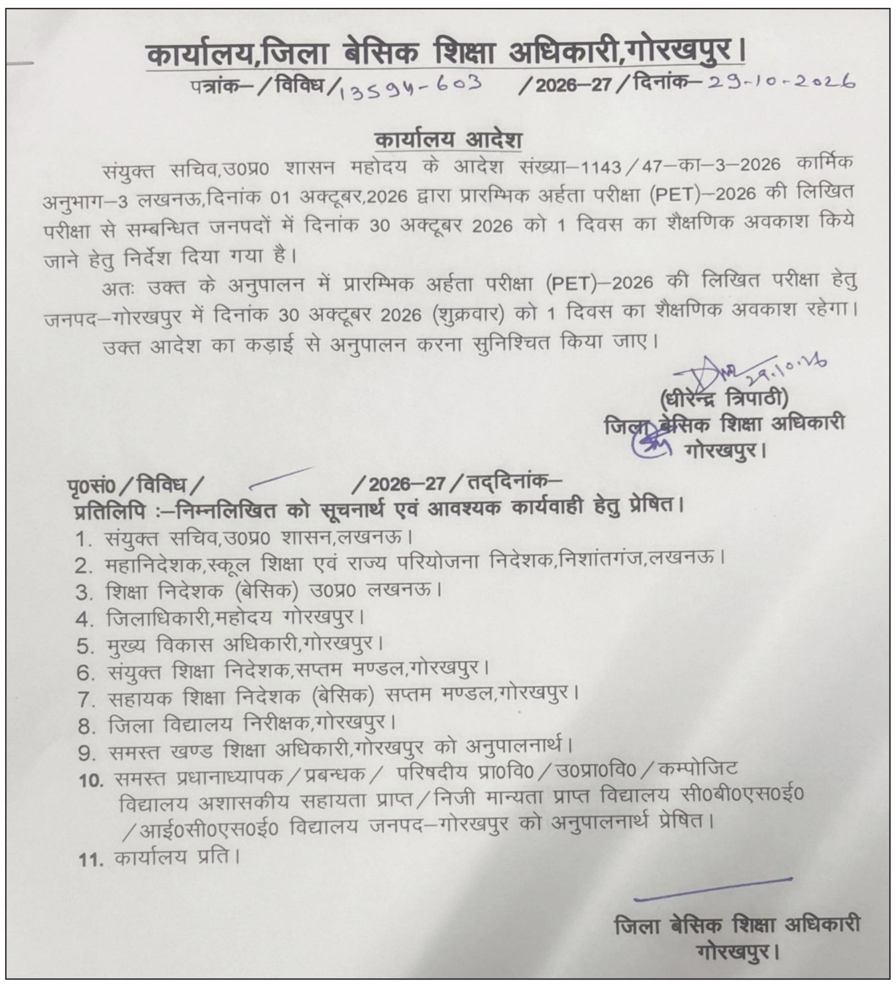
कार्यालय, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, गोरखपुर।

पत्रांक–/विविध/13594-603 /2026–27/दिनांक– 29-10-2026

कार्यालय आदेश

संयुक्त सचिव, उ0प्र0 शासन महोदय के आदेश संख्या–1143/47–का–3–2026 कार्मिक अनुभाग–3 लखनऊ, दिनांक 01 अक्टूबर, 2026 द्वारा प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा (PET)–2026 की लिखित परीक्षा से सम्बन्धित जनपदों में दिनांक 30 अक्टूबर 2026 को 1 दिवस का शैक्षणिक अवकाश किये जाने हेतु निर्देश दिया गया है।

अतः उक्त के अनुपालन में प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा (PET)–2026 की लिखित परीक्षा हेतु जनपद–गोरखपुर में दिनांक 30 अक्टूबर 2026 (शुक्रवार) को 1 दिवस का शैक्षणिक अवकाश रहेगा।

उक्त आदेश का कड़ाई से अनुपालन करना सुनिश्चित किया जाए।

29.10.26
(धीरेन्द्र त्रिपाठी)
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
गोरखपुर।

पृ0सं0/विविध/ /2026–27/तद्दिनांक–

प्रतिलिपि :–निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. संयुक्त सचिव, उ0प्र0 शासन, लखनऊ।
2. महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, निशांतगंज, लखनऊ।
3. शिक्षा निदेशक (बेसिक) उ0प्र0 लखनऊ।
4. जिलाधिकारी, महोदय गोरखपुर।
5. मुख्य विकास अधिकारी, गोरखपुर।
6. संयुक्त शिक्षा निदेशक, सप्तम मण्डल, गोरखपुर।
7. सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक) सप्तम मण्डल, गोरखपुर।
8. जिला विद्यालय निरीक्षक, गोरखपुर।
9. समस्त खण्ड शिक्षा अधिकारी, गोरखपुर को अनुपालनार्थ।
10. समस्त प्रधानाध्यापक/प्रबन्धक/ परिषदीय प्रा0वि0/उ0प्रा0वि0/कम्पोजिट विद्यालय अशासकीय सहायता प्राप्त/निजी मान्यता प्राप्त विद्यालय सी0बी0एस0ई0 /आई0सी0एस0ई0 विद्यालय जनपद–गोरखपुर को अनुपालनार्थ प्रेषित।
11. कार्यालय प्रति।

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
गोरखपुर।

# सरदार पटेल की लौह नीति आज भी प्रासंगिक, अखंड और संगठित भारत ही 'विकसित भारत' की आधारशिला –प्रोफेसर अरुणा सिन्हा

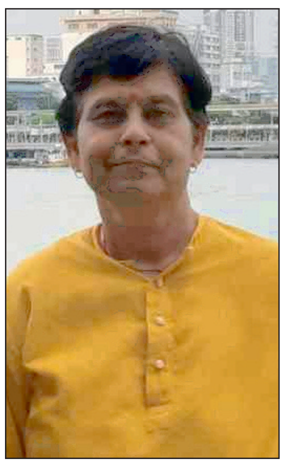

550 से अधिक रियासतों के एकीकरण से राष्ट्र निर्माण तक,वर्तमान राजनीतिक चुनौतियों के बीच सरदार पटेल के विचारों की अहमियत रेखांकित की – प्रोफेसर अरुणा सिन्हा

(संतोष कुमार सिंह)

**वाराणसी** :- प्रो.अरुणा सिन्हा पूर्व विभागाध्यक्ष,एमेरिटस प्रोफेसर,इतिहास विभाग,सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.एवं संस्थापक निदेशक वाराणसी इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्ट्री ने अपने लेखनी मे बताया की प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित भारत' को साकार रूप देने के लिए एक सुसभ्य,संगठित भारत होना भी बेहद आवश्यक है। आज हमारा देश एक बार फिर उन चुनौतियों से रूबरू होता दिख रहा है जो हमारे इतिहास की पुस्तको में स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद दिखती हुई चित्रित की गयीं थीं अर्थात एक ऐसे स्वतंत्र हुए देश को पुनः संगठित करने की चुनौती जिसमे एक छिन्न विछिन्न ब्रिटिश कालीन भारत के साथ ही लगभग साढ़े पांच सौ से कहीं ज्यादा देशी रियासतों के भारतीय संघ से अलग हो जाने का खतरा सर पर मंडरा रहा था।

संभावनाएं हर तरह की थीं जिनमे सबसे प्रमुख यह कि भारत पुनः एक बार फिर से विखंडित हो जाता तरह तरह के राजनितिक स्वार्थों के दबाव में जिनकी नज़र सिर्फ और सिर्फ राजनितिक सत्ता ही हासिल करने पर थी और जिन्हें 'देश के रूप में भारत', उसका पुनर्गठन,उसके समुचित सुरक्षा व्यवस्था से कोई लेना देना था ही नहीं। सौभाग्य से पिछले दशकों के भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन ने कुछ ऐसी राजनितिक शक्सियतें (घटनाएँ भी) हम भारतियों को विरासत में दी थीं जिनके होने से ब्रिटिश सरकार को इस देश से अपना बोरिया बिस्तर लपेटने के लिए मजबूर हो जाना पड़ा और जून 1947 तक उन्होंने यहाँ से चले जाने का निर्णय भी ले लिया। अंततः वह दिन आ ही गया 15 अगस्त को (यद्यपि एक बहुत ही लज्जाजनक एवं दुखद अनुभव के बाद जिसने देश वासियों को झकझोर के रख दिया था)। ऐसी दो महान शक्सियतों में वैसे तों कई अन्य नाम भी लिए जा सकते हैं किन्तु वर्तमान के संदर्भ में दो सबसे महत्वपूर्ण नाम थे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और सरदार वल्लभभाई पटेल (जिनकी जयंती 31अक्टूबर को 'एकता दिवस' के नाम से भी मनाई जाती है)।

क्या खूब संयोग होता अगर 1945 में सुभाषचन्द्र बोस के साथ वह घटना (यद्यपि विवादित) न घटी होती जिसके चलते उनके जैसे योग्य नेत्रत्वकर्ता को देशवासियों ने खो दिया। किन्तु 1947 में भारतमाता के सपूतों में से एक सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपनी निस्वार्थ देश भक्ति एवं अदम्य साहस की प्रेरणा से उस देश के दुसरे संभावित विखंडन को नहीं होने दिया जिसकी कल्पना मात्र से भी सिरहन हो जाती है। भारत के प्रथम गृह मन्त्री/उप प्रधानमन्त्री के रूप में इन्होने 550 से कहीं ज्यादा भारतीय रियासतों को भारतीय संघ में विलय करवा कर न केवल अखंड भारत की नीव रखी,बल्कि जूनागढ़,हैदराबाद,भूपाल,ट्रावन्कोर , कश्मीर जैसी हठी और अवज्ञाकारी रियासतों को भी अपनी 'साम-दम-दण्ड- भेद' के नीति से काबू करने में विजय हासिल करते हुए न जाने कितनी लाख वर्ग किलोमीटर के भारत भूमि को दुश्मन के हाथों जाने से बचा लिया।

अंग्रेजी शासन के भीतर काम कर रही भारत विरोधी लॉबी जिसका उद्देश्य था इस देश का बालकन जैसा हश्र करना यदि अपने मंसूबों में विफल रही तो इसका श्रेय एक मात्र इस लौह पुरुष को ही जाता है जिसने अपने जीवन के संध्या काल में भी अपने गिरते हुए स्वास्थ के बावजूद अपने कर्त्तव्य से च्युत न होते हुए ईंट से ईंट बजा दी और तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु को भी देशहित में इसी पथ का

अनुगमन करने का सन्देश दिया था ताकि भारत की स्वायत्ता/स्वतंत्रता को अक्षुण रखा जा सके। एक बार फिर देश का दुर्भाग्य ही था कि सरदार पटेल की असामयिक मृत्यु ने देश विरोधी ताकतों/ निजी स्वार्थों में लिप्त एवं मानसिक रूप से अपरिपक्व कुछ पदासीन लोगों के लिये देश हित के साथ मनमानी करना बहुत सुलभ कर दिया।

आज हर भारतीय नागरिक को उन्हें केवल एक पोलिटिकल इन्टेगरेटर ही नहीं बल्कि नेशन बिल्डर के रूप में देखना चाहिए। इतिहास की पुस्तकों में एक सामान्य धारणा दिखती है कि सरदार पटेल भारत के बिस्मार्क थे। किन्तु ये उनके एक अति विशिष्ट योगदान का अति सरलीकरण होगा क्यूंकि वल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व में हमें बिस्मार्क की 'ब्लड & आयरन' की नीति से कहीं अधिक उनकी दृढ इच्छा शक्ति, राष्ट्र प्रेम एवंम लोकतान्त्रिक मूल्यों के प्रति सम्मान दिखता है जो निसंदेह भारत के इतिहास का एक सुन्दर पृष्ठ रहा है यहाँ पर लोकतंत्र एवं राजधर्म दोनों में ही मर्यादाओं का विशिष्ट ध्यान रखा गया है।

बेहतर होगा कि उनकी तुलना हम विश्व के अन्य महत्वपूर्ण लोगों जैसे अब्राहम लिंकन,काउंट कावूर,गैरीबाल्डी से भी करें किन्तु सर्वाधिक सही तुलना होगी ।चाणक्य से करना जिस भारत के नक्शे को उन्होंने 1947-49 में हमें दिया उन भौगोलिक सीमाओं को कितना सुरक्षित हम रख पाए ये तों एक बड़ा प्रश्न है ही, इससे भी बड़ा एक अन्य प्रश्न है कि आज जिन वैश्विक चुनौतियों का सामना एक समाज के रूप में देशवसियों को करने के लिए तैयार रहना है क्या उसके लिए अपेक्षित मर्यादाओं पर उसने विचार किया है? आज हमें पुनः नए सिरे से शिक्षित होने की आवश्यकता है *(लेखिका प्रो. अरुणा सिन्हा (पूर्व विभागाध्यक्ष, एमेरिटस प्रोफेसर, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान*

# झारखंड मे अवैध मादक पदार्थों की खेती, व्यापार की सूचना देने पर मिलेगा पुरस्कार

ब्राउन सुगर की अवैध बिक्री और अफीम खेती पर लगेगा अंकुश

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड**

**रांची,** झारखंड में मादक पदार्थों की तस्करी, अवैध बिक्री और अफीम की खेती पर अंकुश लगाने के लिए सरकार ने पुरस्कार नीति के तहत आम लोगों की भागीदारी बढ़ाने की पहल की है।

वर्ष 2026 की पुरस्कार नीति के अनुसार, मादक पदार्थों से जुड़ी अवैध गतिविधियों की विश्वसनीय सूचना देने वालों को निर्धारित शर्तों के तहत नकद पुरस्कार दिया जा सकता है।

हेरोइन और उसके सूचना पर अधिकतम 1.20 लाख रुपये प्रति किलोग्राम की दर निर्धारित की गई है। वहीं, अफीम और गांजा की अवैध खेती नष्ट कराने पर भी पुरस्कार का प्रावधान है।

पश्चिमी सिंहभूम जिला प्रशासन ने जिलेवासियों से अपील की है कि

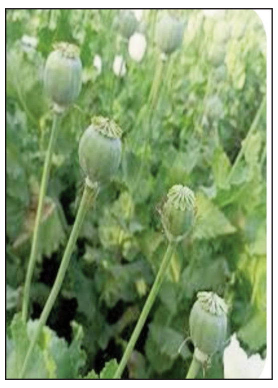

आसपास अफीम की अवैध खेती, मादक पदार्थों के उत्पादन, भंडारण, बिक्री या तस्करी की जानकारी मिलने पर संबंधित पुलिस अधिकारियों को सूचित करें।

प्रशासन के अनुसार, सूचना देने वाले व्यक्ति की पहचान गोपनीय रखने का प्रावधान है। इस पहल का उद्देश्य नशे के अवैध कारोबार पर प्रभावी नियंत्रण करना और युवाओं को नशे की गिरफ्त में जाने से बचाना है।

पुरस्कार नीति में अवैध खेती नष्ट कराने के लिए भी प्रोत्साहन निर्धारित किया गया है। अफीम पोस्ता की अवैध खेती नष्ट करने पर 10 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर और गांजा की अवैध खेती नष्ट करने पर भी 10 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर की दर तय की गई है।

इसके अलावा मादक पदार्थों के निर्माण में इस्तेमाल होने वाले नियंत्रित रसायनों और अन्य मनःप्रभावी पदार्थों से संबंधित सूचनाओं पर भी नीति के अनुसार पुरस्कार दिया जा सकता है।

नीति में विभिन्न पदार्थों की बरामदगी से संबंधित अधिकतम पुरस्कार दरें अलग-अलग निर्धारित की गई हैं।

हेरोइन और उसके लवणः 1.20 लाख रुपये प्रति किलोग्राम

मॉर्फिन और उसके लवणः 20 हजार रुपये प्रति किलोग्राम

एम्फेटामिन और मेथाम्फेटामिनः 20 हजार रुपये प्रति किलोग्राम

कोकीन और उसके लवणः 2,400 रुपये प्रति किलोग्राम

हशीश ऑयलः 10 हजार रुपये प्रति किलोग्राम

हशीशः 2,000 रुपये प्रति किलोग्राम

अफीमः 6,000 रुपये प्रति किलोग्राम

गांजाः 600 रुपये प्रति किलोग्राम

पोस्ता भूसाः 240 रुपये प्रति किलोग्राम

मैंड्रैक्स टैबलेटः 200 रुपये प्रति किलोग्राम

एक्स्टेसी (एमडीएमए): 15 हजार रुपये प्रति 1,000 टैबलेट

एलएसडीः 30 रुपये प्रति ब्लॉट

प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि सूची में दी गई दरें अधिकतम निर्धारित दरें हैं। वास्तविक पुरस्कार का निर्धारण पदार्थ की श्रेणी, बरामद मात्रा, शुद्धता, सूचना की उपयोगिता और पात्रता के आधार पर किया जाएगा। इसलिए केवल सूचना देने से किसी निश्चित राशि के पुरस्कार की गारंटी नहीं है।

# चक्रवात 'अर्नब': पूर्व तट रेलवे ने सुरक्षा उपायों को तेज किया, फंसे यात्रियों की सहायता के लिए किए इंतजाम

**मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा**

**भुवनेश्वर** : चक्रवाती तूफान 'अर्नब' के प्रभाव से हुई लगभग 550 मिमी भारी बारिश के कारण गंजाम जिले में बाहुदा नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ गया है। भारी बारिश के बाद बाहुदा नदी पर स्थित बाघलाटी बांध का जलस्तर खतरे के निशान को पार कर गया है। इसके परिणामस्वरूप इच्छापुरम (IPM) और झाडुपुड़ी (JPI) के बीच स्थित रेलवे पुल के पास भी जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर पहुंच गया है।

मौजूदा स्थिति को देखते हुए पूर्व तट रेलवे (ECoR) ने यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए कई एहतियाती कदम उठाए हैं। विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। वहीं, परिस्थितियों को देखते हुए हावड़ा–चेन्नई मार्ग पर चलने वाली कई ट्रेनों के मार्ग में परिवर्तन किया गया है।

पूर्व तट रेलवे जलस्तर की नियमित जानकारी प्राप्त करने और स्थिति का आकलन करने के लिए जिला प्रशासन के लगातार संपर्क में है। रेलवे परिचालन और यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक उपायों की समीक्षा तथा समन्वय के उद्देश्य से राज्य सरकार के साथ उच्चस्तरीय बैठक भी की गई है। ट्रेन सेवाओं में व्यवधान के कारण विभिन्न स्थानों पर फंसे यात्रियों को आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने के लिए पूर्व तट रेलवे व्यवस्था कर रहा है। इसके तहत भोजन और पीने के पानी की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। यात्रियों का मार्गदर्शन करने, उनकी शिकायतों का समाधान करने और आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए अतिरिक्त कर्मचारियों, रेलवे सुरक्षा बल (RPF) के जवानों तथा यात्रा टिकट परीक्षकों (TTEs) को तैनात किया गया है।

# वोट बचाओ देश बचाओ अभियान में शामिल होने झारखंड से 12 बसों में कांग्रेसी दिल्ली रवाना

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड**

**रांची,** दिल्ली रैली में शामिल होने के लिए पूर्व मंत्री बंधु तिर्की के आवास से 12 बसों में सवार होकर समर्थक दिल्ली रवाना हुए. इस मौके पर कांग्रेस नेत्री और राज्य की मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने हरी झंडी दिखाकर उन्हें रवाना किया. उन्होंने कहा कि रामलीला मैदान की रैली ऐतिहासिक होगी, जिसमें झारखंड से बड़ी संख्या में लोग शामिल होंगे. उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर लग रहे आरोपों को सही बताते हुए कहा कि एसआईआर में जिस तरह की गड़बड़ी हुई है, उसकी जांच और ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे तक आंदोलन जारी रहेगा. उन्होंने भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि मुख्य चुनाव आयुक्त पर जब आरोप लग रहे हैं तो भाजपा को क्यों एतराज हो रहा है, यह समझ से परे है. इसका मतलब है कि वोट चोरी के बल पर सरकार बनाने वाली भाजपा को इस बात का डर है कि उसकी पोल खुल रही है.

पूर्व मंत्री और कांग्रेस के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा कि इस रैली में कांग्रेस सहित महागठबंधन के सभी सहयोगी दल शामिल होंगे. झारखंड से हजारों-हजार की संख्या में लोग बसों और ट्रेनों से सवार होकर दिल्ली जा रहे हैं. दिल्ली की सड़क पर 1 नवंबर को ऐतिहासिक रैली होगी.

प्रदेश कांग्रेस ने इस रैली में झारखंड से करीब 12 हजार कार्यकर्ताओं के दिल्ली जाने का दावा किया है. प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने कहा कि देश में लोकतंत्र को तार-तार किया जा रहा है. नागरिकों के अधिकार समाप्त करने का षड्यंत्र रचा जा रहा है. नागरिकों को मताधिकार से वंचित करने की किसी भी कोशिश को सफल नहीं होने देंगे. ऐसे में दिल्ली के रामलीला मैदान में 1 नवंबर को आयोजित 'वोट बचाओ देश बचाओ' रैली ऐतिहासिक होगी. उन्होंने महागठबंधन के सभी सहयोगी दलों के इस रैली में शामिल होने का दावा किया है

प्रदेश भाजपा ने महागठबंधन की दिल्ली रैली को सुपर फ्लॉप होने का दावा किया है. भाजपा प्रदेश प्रवक्ता संदीप वर्मा ने इस रैली की आलोचना करते हुए कहा कि महागठबंधन के लोगों की बातों से अभी से उनकी वास्तविकता पता चल रही है. दरअसल इनके साथ जनता दिल्ली जाना ही नहीं चाह रही है. इन्हें भी पता है कि फ्लॉप शो होने वाला है, क्योंकि राहुल गांधी के नेतृत्व में कोई भी कार्यक्रम सफल नहीं होता. इसके पीछे वजह यह है कि उनका विषय ही गलत होता है. उन्होंने कहा कि राष्ट्र विरोधी नीतियों के साथ जिस तरह कांग्रेस आगे बढ़ रही है, हमें नहीं लगता कि उन्हें जनसमर्थन

# बागी बीजद विधायकों की बढ़ी मुश्किलें, हाईकोर्ट ने जारी किया नोटिस

**मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा**

**भुवनेश्वरः** बीजू जनता दल (बीजद) के बागी विधायकों की सदस्यता रद्द करने से संबंधित याचिका पर सुनवाई करते हुए ओडिशा हाईकोर्ट ने पांच विधायकों को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। नोटिस पाने वाले विधायकों में अरविंद महापात्र, सुभासिनी जेना, सनातन महाकुड़, सौभिक बिश्वाल और चक्रमणि कंहर शामिल हैं। गुरुवार को जारी नोटिस में हाईकोर्ट ने विधायकों को अगली सुनवाई से पहले अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। मामले की अगली सुनवाई 11 जनवरी को होगी। गुरुवार को मुख्य रूप से विधानसभा अध्यक्ष के समक्ष नए सिरे से याचिका दायर करने की वैधता पर सुनवाई हुई। विधानसभा अध्यक्ष की ओर से महाधिवक्ता ने हाईकोर्ट में पक्ष रखा।

महाधिवक्ता ने दलील दी कि विधायकों की सदस्यता रद्द करने के संबंध में विधानसभा अध्यक्ष द्वारा पहले दिया गया आदेश न्यायिक प्रक्रिया का हिस्सा है। इसलिए अपने ही आदेश पर दोबारा विचार करने का कोई प्रावधान नहीं है। अदालत ने इस दलील को स्वीकार करते हुए पांच विधायकों को नोटिस जारी किया। राज्यसभा चुनाव में क्रॉस वोटिंग को लेकर बीजद का आंतरिक विवाद सामने आया था। उस समय आठ बागी बीजद विधायकों द्वारा क्रॉस वोटिंग किए जाने की चर्चा हुई थी। इसके बाद बीजद ने इन विधायकों की सदस्यता रद्द करने के लिए विधानसभा अध्यक्ष के समक्ष याचिका दायर की

थी। हालांकि, विधानसभा अध्यक्ष ने तकनीकी आधार पर याचिका खारिज कर दी थी। बाद में बीजद ने विधानसभा अध्यक्ष के फैसले को चुनौती देते हुए हाईकोर्ट में मामला दायर किया। याचिकाकर्ताओं की ओर से कहा गया है कि उन्होंने केवल विधायकों की सदस्यता रद्द करने के मुद्दे पर अदालत का ध्यान आकर्षित किया है और अदालत इस याचिका को पहले ही स्वीकार कर चुकी है।

अब इस मामले में पांच विधायकों को नोटिस जारी होने के बाद राजनीतिक और कानूनी हलकों में चर्चा तेज हो गई है।

# राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का 'चरैवेति एकत्रीकरण' - डेली कॉलेज, इंदौर में संपन्न हुआ।

इन्दौर डेली कॉलेज परिसर में संघ के शताब्दी वर्ष (1925-2025) के समापन अवसर पर वृहत चरैवेति-चरैवेति' एकत्रीकरण हुआ।

इस अवसर पर सहसरकार्यवाह अतुल लिमये ने इस अवसर पर कहा कि विचार को बड़ा रखते हुए हमें राष्ट्रवाद से जुड़ना होगा। इस शताब्दी वर्ष के समापन का हर वाक्य ध्येय है चरैवेति-चरैवेतिः अर्थ है निरंतर अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते रहना।

इंदौर विभाग के 5 जिलों और - 4 महानगरीय जिलों और महू ग्रामीण के 345 बस्तियों और 65 मंडलों के करीब 1 लाख सक्रिय स्वयंसेवक ने पूरा गणवेश में ध्वज प्रणाम, शारीरिक कौशल - योग-व्यायाम प्रदर्शन, घोष और सामूहिक गीत। भी गया। 100 वर्ष की यात्रा हर स्वयंसेवक के अपने आप में भारत के जुड़ाव का एकीकरण संदेशः व्यक्ति निर्माण से समाज परिवर्तन, सामाजिक समरसता और राष्ट्र कार्य के प्रति समर्पण का संकल्प दोहराया गया। भारत को परम वैभव पर प्रतिष्ठित करने का आह्वान करते हुए अतुल लिमये ने कहा समाज की चुनौतीयो और समस्याओं के समाधान के लिए समाज की सृजन शक्ति के साथ कार्य करने की शैली विकसित करना है। दुरा शक्तियों से समाज को बचना चाहिए, विकसित भारत वैभव शाली भारत के लिए समाज का मन अनुकूल बनाना होगा। संघ की स्थापना को 100 वर्ष पूरे होने पर मालवा प्रांत में वर्षभर कार्यक्रम चले, पथ संचलन निकले, और यह एकत्रीकरण उसी श्रृंखला का समापन समारोह था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023